बाल-चरितमाला सं०—३८

महात्मा गाँधी

पं० ज्योतिप्रसाद मिश्र 'निर्मल'

प्रकाशक

छात्रहितकारी पुस्तकमाला

दारागंज, प्रयाग।

दसवाँ संस्करण] १९४८ [मूल्य ।=)

प्रकाशक
श्री केदारनाथ गुप्त, एम० ए०
प्रोप्राइटर—छात्रहितकारी पुस्तकमाला,
दारागञ्ज, प्रयाग ।

मुद्रक
सत्य प्रसाद पांडेय 'विशारद'
नागरी प्रेस, दारागंज
प्रयाग ।

महात्मा गाँधी

आजकल हिन्दुस्तान ही नहीं तमाम दुनिया में कोई ऐसा न होगा जिसने महात्मा गाँधी का नाम न सुना हो। महात्मा जी अपनी तपस्या, त्याग और सच्चाई से हरएक व्यक्ति के दिल में समाये हुए हैं। आज हिन्दुस्तान का बच्चा बच्चा जानता है कि महात्मा गाँधी की आवाज देश की आवाज है और वे ही छोटे, बड़े, गरीब अमीर, किसान-मजदूर, प्रत्येक वर्ग या समुदाय के सब से बड़े नेता थे। जिन्होंने महात्मा गाँधी को अपनी आँखों से देखा है, वह जानते हैं कि वे एक बहुत दुबले-पतले आदमी थे। मुट्ठी भर हड्डियों का ढाँचा चमड़े से ढका हुआ था। कद भी छोटा था, उम्र भी अधिक हो गई थी। लेकिन उसी कमजोर शरीर में भगवान ने ऐसी करामात भर दी थी कि गाँधी जी खुद निर्भय थे और उनके सबब से सारा हिंदुस्तान निर्भय हो गया है और उन्हीं के मार्ग-प्रदर्शन से हम स्वाधीन हो गये हैं।

जन्म और बाल्य काल

महात्मा गाँधी का पूरा नाम मोहनदास करमचंद गाँधी था। करमचंद पिता का नाम है।

काठियावाड़ में द्वारकापुरी के पास सुदामापुरी है। उसे अब पोरबन्दर कहते हैं। गाँधी जी का जन्म इसी सुदामापुरी में उत्तम वैश्य-कुल में २ अक्टूबर सन् १८६९ ई० में हुआ। पोरबन्दर गुजरात के राजाओं की राजधानी थी। गाँधी जी के पूर्वज वहाँ के राजा के मंत्री रहते आये हैं। गाँधीजी के पिता करमचन्दजी भी २५ वर्ष तक पोरबन्दर के मंत्री रहे। पीछे कारणवश अपना पद अपने छोटे भाई को देकर वे राजकोट में आकर बस गये। करमचन्दजी बड़े निडर, सच्चे और साहसी आदमी थे। गाँधीजी की माता साक्षात् देवी थीं। उनका स्वभाव बड़ा सीधा और रहन-सहन बड़ी सादी थी। पूजा-पाठ और व्रत में उनका बड़ा विश्वास था। वह बड़ी दयालु थीं। किसी के मामूली दुख को देखकर भी उनका दिल पसीज जाता था। दुखियों और गरीबों की वे अक्सर मदद करती रहती थीं।

गाँधी जी पर अपने माता-पिता के आचरणों का बड़ा प्रभाव पड़ा। पिता की तरह वे निडर और बात के धुनी हुए और माता की तरह धार्मिक और दयावान हुए।

गाँधीजी को अपनी माता से बड़ा प्रेम था; माता में उनकी अचल भक्ति थी।

शिक्षा

गाँधीजी ५ वर्ष की उम्र में पोरबन्दर के गुजराती पाठशाला में पढ़ने के लिये भर्ती किये गये। फिर तीन वर्ष तक राजकोट के वर्नाक्यूलर स्कूल में पढ़ते रहे। १० वर्ष की अवस्था में अंग्रेजी स्कूल में दाखिल हुये। केवल १७ वर्ष की उम्र में उन्होंने मैट्रिकुलेशन का इम्तहान पास किया। इसी बीच में गाँधीजी का विवाह श्रीमती कस्तूरीबाई के साथ हुआ। विवाह के एक वर्ष बाद इनके पिता करमचन्द गाँधी का देहान्त हो गया। स्कूल में पढ़ते समय गाँधीजी बुरी संगति में फँस गये। दिल से धार्मिक भाव जाता रहा। किन्तु गाँधी जी अपनी माता के बड़े भक्त थे। माता को जब पुत्र के बिगड़ने की खबर मिली, तब वे बहुत दुखी हुई। उन्होंने गाँधी जी से पूछा। गाँधी जी माता के सामने झूठ नहीं बोल सकते थे! इसीसे अन्त में उन्हें बुरी संगति छोड़नी पड़ी।

एन्ट्रेंस पास कर लेने के बाद गाँधी जी ने भावनगर के कालेज में पढ़ना शुरू किया। उन्हीं दिनों राजकोट के एक निवासी बिलायत से बैरिस्टरी पास करके आये। गाँधीजी के एक मित्र ने उन्हें भी बिलायत जाकर बैरिस्टर बनकर आने की सलाह दी। लेकिन उनकी माता उन्हें

विलायत नहीं जाने देना चाहती थीं। गाँधी जी ने खुद इसी बारे में लिखा है—'जब मेरे इंगलैंड जाने की बात छिड़ी, माँ ने बार बार मना किया। अन्त में बहुत कहने-सुनने पर माँ ने एक शर्त पर जाने की आज्ञा दी—वे मुझे जैन साधु के पास ले गईं, और मुझे उनके सामने तीन सौगन्ध खाने को कहा कि मैं मांस, मदिरा और पर नारी से दूर रहूँगा। इसी मेरे प्रण ने, जो मैंने माँ के सामने किया था, लन्दन में मुझे कई बुराइयों से बचाया।"

सन् १८८८ ईसवी में गाँधी जी बैरिस्टरी पास करने के लिये लन्दन पहुँचे।

एक दिन लन्दन के एक अंगरेज साहब ने गाँधीजी को अपने यहाँ खाना खाने को बुलाया। गाँधी जी खाना खाने गये और खाने के पहिले ही उन्होंने साहब से पूछा कि क्या इस खाने में मांस है! यह सुनकर साहब बहुत बिगड़े और उन्होंने गांधीजी को वहाँ से चले जाने को कहा। गाँधीजी चुपचाप उठकर वहाँ से चले आये और अपना जैंटिलमैनी ठाट छोड़ दिया। एक किराये का मकान लेकर सादगी से रहने लगे और अपने हाथ से भोजन भी बनाकर खाने लगे। इस समय गाँधी जी के मन में धार्मिक भावों का उदय हुआ। वहीं उन्होंने गीता पढ़ी, जिसका प्रभाव इनके दिल पर अधिक पड़ा।

तीन साल में बैरिस्टरी पास करके सन् १८९१ ई०

में गाँधी जी घर लौट आये। घर पहुँचने पर इन्हें यह दुखभरी खबर मिली कि इनकी धर्म-परायणा माता का स्वर्गवास हो चुका है। घर आने पर गाँधी जी की शुद्धि हुई और वे अपनी वैश्य बिरादरी में शामिल कर लिये गए। फिर वे बम्बई हाईकोर्ट में वकालत करने लगे। किन्तु अपना अधिक समय हिन्दू धर्म की पुस्तकें पढ़ने में बिताते थे। १८ महीने वकालत करने के बाद इनको एक मुकदमें की पैरवी करने के लिए दक्षिण अफ्रीका जाना पड़ा। पोरबन्दर के कुछ सौदागरों की एक कम्पनी दक्षिण अफ्रीका में व्यापार करती थी। प्रीटोरिया (दक्षिण अफ्रीका) में कम्पनी के कुछ हिस्सेदार एक मुकदमे में फँस गये। गाँधी जी ने अपने बड़े भाई के अनुरोध से इस मुकदमे को अपने हाथ में लिया।

दक्षिण अफ्रीका में दमन

सन् १८९३ ई० मे गाँधी जी ने दक्षिण अफ्रीका में पैर रखा। वह मुल्क इन्हें बहुत अच्छा मालूम हुआ, लेकिन वहाँ के रहन-सहन को देखकर उन्हें ताज्जुब हुआ। गाँधी जी को अफ्रीका के गोरों की चाल ढाल बहुत बुरी मालूम हुई।

अफ्रीका पहुँच जाने पर सबसे पहले गाँधी जी को गोरों के अत्यार का तजुरबा इस प्रकार हुआ। गाँधी जी मुकदमे की पैरवी के लिए प्रिटोरिया जा रहे थे। उन्होंने

रेल का पहले दर्जे का टिकट लिया और डब्बे में बैठ गये। पहले दर्जे में एक गोरा भी बैठा हुआ था। उसने देखा कि एक हिन्दुस्तानी भी उसके बराबर बैठा हुआ है। वह तिलमिला उठा। उसने गार्ड को बुलाकर कहा—इस हिन्दुस्तानी को डिब्बे से बाहर निकाल दो। गार्ड ने गाँधी जी को हुक्म दिया कि डिब्बे से बाहर निकल जाओ और मालगाड़ी में जाकर बैठो। गाँधी जी ने कहा—मैंने पहले दर्जे का टिकट लिया है और वे अपनी जगह से न उठे। गार्ड ने पुलिस बुलवाया और वे जबरदस्ती डिब्बे से बाहर निकाल दिये गये। सामान प्लेटफार्म पर फेंक दिया गया, ट्रेन चलाई गई। गाँधी जी रात भर प्लेटफार्म पर जाड़े में काँपते रहे।

एक बार गाँधी जी ट्रांसवाल में रेल में सफर कर रहे थे, एक गार्ड आया। उसने कहा—तुम यहाँ से हट जाओ। हम यहाँ बैठकर स्मोकिङ्ग (चुरुटबाजी) करेंगे। तुम हमारे पैर के पास बैठ जाओ। गाँधी जी डटे रहे। तब वह मुक्का मारने लगा। उसी तरह एक बार यह बोअरों (अफ्रीका के गोरों) के प्रेसिडेन्ट के बँगले के सामने की सड़क से जा रहे थे, एक सिपाही ने इन्हें लात मारकर वहाँ से हटाया। इन बातों से गाँधी जी की तबियत ऊब उठी। यह हिन्दुस्तान लौट आने की सोचने लगे। लेकिन मुकदमे की पैरवी के लिए एक साल का ठीका ले चुके थे।

इसलिए उन तकलीफों को सहते हुए गाँधी जी ने साल बिता दिया।

साल के आखिर में जब यह हिन्दुस्तान लौटने की तैयारी कर रहे थे कि उन्होंने सुना कि अफ्रीका में रहने वाले हिन्दुस्तानियों के हक छीने जा रहे हैं और उनके लिए एक कानून बननेवाला है कि गोरों के राज-काज में वे कोई दस्तन्दाजी न कर सकेंगे और न हिन्दुस्तानी अफ्रीका की पार्लियामेंट में अपना कोई मेम्बर भेज सकेंगे। गाँधी जी को गोरों के अन्याचार का काफी तजुरबा हो चुका था और जब उन्होंने यह बात सुनी तब तो उनके दिल को बड़ी चोट पहुँची। उन्होंने अपने हिन्दुस्तानी भाइयों को सलाह दी, कि हिन्दुस्तानियों के दस्तखत से एक अर्जी विलायत के सेक्रेटरी के पास भेजी जाय। ऐसा हुआ भी। एक अर्जी भेजी गई, उसमें दस हजार हिन्दुस्तानियों के दस्तखत थे।

हिन्दुस्तानियों ने गाँधी जी से प्रार्थना की कि वे हिन्दुस्तान न जायँ। उनको एक नेता की सख्त जरूरत थी जो समय-समय पर सलाह दे और उनके मुकदमें आदि की पैरवी करता रहे। गाँधी जी ने अपने भाइयों की प्रार्थना मंजूर कर ली। गोरों ने बड़ी अड़चन डाली लेकिन गाँधी जी यहाँ दो साल तक वकालत करते रहे। इसी बीच में वहाँ उन्होंने 'नैटाल इंडियन काँगरेस' और 'नैटाल इंडियन

एजूकेशन एसोसियेशन' नामक दो संस्थायें कायम कीं।

सन् १८९६ ईसवी में गाँधी जी अपनी स्त्री और पुत्रों को लेने के लिए हिन्दुस्तान लौट आये। यहाँ उनका बड़ा स्वागत हुआ। गाँधी जी ने अफ्रीका के हिन्दुस्तानियों के दुख की कहानी हिन्दुस्तान में सुनाई और सच्ची खबरें अखबारों में छपवा दी, जो विलायत तक बड़े जोरों से फैल गईं। इन शिकायतों को पढ़कर अफ्रीका के गोरे और भी आग-बबूले हो गये।

गाँधी जी हिन्दुस्तान में कुछ दिन रह कर अफ्रीका के होनेवाले अत्याचारों को सच्चाई के साथ हिन्दुस्तानियों के सामने पूरी तरह से रखना चाहते थे, लेकिन जब उन्हें यह खबर मिली कि अब गोरों का अत्याचार और भी बढ़ता जा रहा है, और वहाँ के हिन्दुस्तानियों के लौट आने के तार मिले, तब वह अपने बाल-बच्चों को लेकर अफ्रीका जाने के लिए जहाज पर बैठ गये।

जब यह खबर अफ्रीका के गोरों ने सुनी कि गाँधी जी फिर अफ्रीका आ रहे हैं, तब वे बहुत कुड़मुड़ाए, दांत पीसने लगे। बड़ी-बड़ी सभायें करके गाँधी जी को जहाज पर से ही वापस लौटा देने का आन्दोलन करने लगे। गोरों का आन्दोलन इतना जोर पकड़ गया कि जिस जहाज में गाँधी जी थे वह एक महीने तक समुद्र के किनारे खड़ा रहा और हिन्दुस्तानी उतरने न पाये। जहाज के मालिक

भी बहुत परेशान हुए, तब कहीं १३ जनवरी सन् १८९७ ई० को जहाज किनारे लगा और उस पर के सफर करने वाले उतरे। किनारे गोरों का बड़ा भारी जमाव था। वे खूनियों की तरह गाँधीजी को ढूँढ़ने लगे। गोरे मार-पीट पर उतारू हो गये थे। गाँधी जी कई अँग्रेज मित्रों की मदद से बाल बच्चे सहित ट्रांसवाल के प्रसिद्ध सौदागर रुस्तमजी पारसी के यहाँ पहुँचाये गये। लेकिन गाँधीजी रास्ते ही में रह गये। गाँधीजी को किसी गोरे ने पहचान लिया। उसने तमाम शोर कर दिया। फिर क्या था गोरों का झुण्ड गाँधीजी के पीछे लग गया। गाँधीजी को गोरों ने बहुत तङ्ग किया। मारा-पीटा भी। लेकिन किसी तरह से वे रुस्तम जी के यहाँ सकुशल पहुँच गये। इतने पर भी गांधी जी अँग्रेजों से घृणा नहीं करते थे। बोअर युद्ध के समय उन्होंने अँग्रेजों की मदद खुल कर की।

बोअर युद्ध खत्म हो जाने पर गांजी जी ने सोचा कि शायद अंगरेजों को इतनी मदद पहुँचाने पर गोरे अत्याचार करना बन्द कर दें। ऐसा सोचकर गाँधीजी हिन्दुस्तान वापस चले आये। लेकिन वहाँ आकर फिर मालूम हुआ कि अब हिन्दुस्तानियों पर पहिले से ज्यादा जुल्म होने लगा। इसलिये गाँधीजी सन् १९०३ ईसवी में अपने हिन्दुस्तानी भाइयों की मदद के लिये अफ्रीका को फिर रवाना हो गए।

गाँधी जी प्रिटोरिया सुप्रीम कोर्ट में वकालत करने लगे। उसी समय उन्होंने 'इंडियन ओपिनियन' नामक अखबार निकला। उसमें हिन्दुस्तानियों की दुःख की खबरें छापकर लोगों में फैलाते रहे। सन् १९०४ ई० में जोहंसबर्ग में प्लेग फैला। गाँधीजी ने इस मौके पर भी हिन्दुस्तानियों की मदद में बीमारों की बड़ी सेवा की।

गाँधीजी ने अङ्गरेजों की कई मौकों पर मदद की लेकिन फिर भी हिन्दुस्तानियों पर जुल्म होना कम नहीं हुआ। उन्हें कदम-कदम पर बेइज्जत होना पड़ता था। सन् १९०६ में वहाँ कानून जारी हुआ कि हर एक हिन्दुस्तानी को अपना नाम रजिस्टर करा लेना पड़ेगा। इससे हिन्दुस्तानी बहुत दुखी हुए। उन्होंने एक बड़ी सभा करके यह तय किया कि कोई भी हिन्दुस्तानी अपने नाम की रजिस्टरी न करावे और न अंगूठे का निशान लगावे, चाहे जेल जाना पड़े। इस कानून का विरोध करने के लिये एक डेपुटेशन इङ्गलैंड गया। गाँधीजी विलायत गये। वहाँ उन्होंने कई सभाओं में अफ्रीका में हिंदुस्तानियों पर होने वाले जुल्मों की कहानी सुनाई। इस आन्दोलन का यह नतीजा हुआ कि सम्राट ने यह वचन दिया कि जब तक वैधानिक सरकार अफ्रीका में न बन जाय तब तक रजिस्टरी वाला कानून न जारी किया जाय, लेकिन थोड़े दिन

बाद नई सरकार कायम हो गई और रजिस्टरी का कानून पास हो गया।

सत्याग्रह की लड़ाई

गाँधीजी विलायत से वापस आ गये थे। अब बड़ा बेढब सवाल सामने आया। या तो नाम की रजिस्टरी कराई जाय या अंगूठे का निशान बनाया जाय, या अपनी इज्जत प्रतिष्ठा और स्वाभिमान की रक्षा के लिये दुःख सहा जाय। गाँधी जी ने सब को समझा दिया कि अगर इस वक्त अपने हकों की रक्षा न की गई तो अफ्रीका में हिंदुस्तानियों की हालत खराब हो जायगी और आगे और भी बुरे-बुरे कानून बनेंगे। इसलिये सब को तकलीफ और दुख सहने के लिये तैयार हो जाना चाहिये। फिर क्या था, रजिस्टरी करने वाले परेशान हो गये, लेकिन हिन्दुस्तानियों ने इनकार कर दिया। सरकार ने मियाद बढ़ाई लेकिन फिर भी कामयाबी नहीं हुई। इसलिये कानून न मानने पर हिंदुस्तानियों पर मुकदमे चलाये गये। कितनों ही को जेल जाना पड़ा। गाँधीजी पर भी मुकदमा चला और उन्हें दो महीने जेल में रहना पड़ा।

जेल जाते वक्त गाँधीजी ने अदालत से कहा—सत्याग्रह की लड़ाई शुरू करने की जिम्मेदारी मेरे ऊपर है। इसलिये मुझे जो भी सजा दी जाय, मैं उसे मानने को तैयार हूँ।

इस आंदोलन और सत्याग्रह का नतीजा यह हुआ कि सरकार का दिल दहल गया। उसने तीन महीने के लिये कानून मुलतवी करके कहा कि अगर इस बीच में सब लोग रजिस्टरी करवा लें तो तीन महीने बाद कानून रद्द कर दिया जायगा। गाँधीजी ने सरकार को मौका देना चाहा और यह बात मान ली। हिन्दुस्तानियों ने गाँधीजी को समझाया कि सरकार धोखा देगी लेकिन उन्होंने मौका देना ही अच्छा समझा और उन्होंने अपनी रजिस्टरी करा ली।

सरकार ने अपना वादा पूरा न किया। इसलिये गाँधी जी ने फिर सत्याग्रह छेड़ दिया। इस बार भी सैकड़ों आदमी जेल गये। गाँधी जी को दो बार जेल जाना पड़ा। जेल में कैदियों पर बड़ी कड़ाई रखी गई थी, उन्हें तकलीफें भी खूब दी जाती थीं। पहले ही दिन गाँधीजी और उनके साथियों को काम पर लगाया गया। पहले दिन कोड़े पड़े। कुदाल चलाने के कारण गाँधीजी के हाथ में छाले पड़ गये। उसमें से पानी बह रहा था। कैदियों के खाने में चर्बी मिलाई जाती थी। कैदियों ने चर्बी मिला हुआ खाना नहीं छुआ। तब गाँधीजी को घी मिलने का हुक्म हुआ लेकिन गाँधीजी ने खाने से यह कहकर इनकार कर दिया कि हमारे सभी साथियों को घी मिलना चाहिये।

दो महीना पूरा न होने पाया था कि गाँधी जी जोहांसबर्ग के जेल में भेज दिये गये। गाँधी जी कैदी की पोशाक में पैदल जेल ले आये गये। रास्ते में जो उन्हें देखता था, दुखी होकर रोने लगता था। जोहांसबर्ग में एक घटना और हुई। एक दिन गाँधी जी पाखाना बैठे। इतने में एक हट्टा कट्टा विकराल पुरुष आया और गालियाँ देने लगा। गाँधी ने कहा—ठहर जाओ, अभी उठता हूँ। उसने गुस्से में गाँधी जी को उठाकर बाहर फेंक दिया। गाँधी जी स्वयं लिखते हैं—"मैं घबराया नहीं, हँस कर चलता बना। यह सब जो कैदी वहाँ देख रहे थे, उनकी आँखों मे आँसू आ गये।"

गाँधीजी जब जेल से छूट कर आये तो यह तय किया कि अब की बार फिर एक डेपूटेशन विलायत ले जाया जाय। और फिर यहाँ की दुख कथा वहाँ सुनाई जाय। गाँधी जी अपने साथियों के साथ विलायत पहुँच गये। वहाँ गाँधी जी ने खूब आन्दोलन किया और काफी कामयाबी हुई। गाँधी जी के मित्र मिस्टर पोलक इन दिनों हिन्दुस्तान आ गये थे। उन्होंने भी घूम घाम कर अफ्रीका में होने वाले अत्याचारों को लोगों को सुनाया। सन् १९१२ ई० में मिस्टर गोखले ने बड़े लाट की कौंसिल में बड़ा जोरदार व्याख्यान दिया और अफ्रीका में होने वाले अत्याचारों का वर्णन किया। उन दिनों हिन्दुस्तान में

लार्ड हार्डिङ्ग वाइसराय थे। उन्होंने बड़ी हमदर्दी दिखलाई। अफ्रीका की सरकार बार बार अपनी बात बदलती रही। गाँधी जी को १९१३ में पुनः सत्याग्रह करना पड़ा। इस बार माता कस्तूरबा को भी जेल भेज दिया गया। कड़े दमन के बाद भी अन्त में सत्याग्रहियों की विजय हुई। सन् १९१४ के अन्त तक सब सत्याग्रही छोड़ दिये गये। कई कानूनों को रद्द कर दिया गया।

साबरमती आश्रम

हिन्दुस्तान में लौटकर महात्मा गाँधी ने एक साल तक किसी भी सभा सोसाइटी में न बोलने का निश्चय किया। इस एक साल में वे हिन्दुस्तान की असली हालत जान गये। ३० मई सन् १९१५ ईसवी में महात्माजी ने अहमदाबाद के पास साबरमती नदी के किनारे एक बहुत ही सुन्दर शान्त जगह पर सत्याग्रह-आश्रम कायम किया। उनका उद्देश्य जिन्दगी भर तक देश-सेवा की शिक्षा प्राप्त करना और सेवा करना था। आश्रम में रहने-वालों को सत्यव्रत, अहिंसाव्रत, ब्रह्मचर्यव्रत, स्वदेशी व्रत आदि नियमों का पालन करना पड़ता था। बारह वर्ष से कम उम्र के लड़के-लड़की आश्रम में दाखिल नहीं किये जाते थे। चर्म, खेती, कपड़ा बुनना और पढ़ने की शिक्षा दी जाती थी। आश्रम के लड़के-लड़कियाँ नियम से चार बजे सबेरे उठ जाते और शाम को आठ बजे सो जाते

थे। इस आश्रम से सैकड़ों स्त्री पुरुष और युवक निकले जिन्होंने देश की सेवा में बहुत बड़ा हिस्सा लिया।

चम्पारन की जाँच

सन् १९१६ ई० में लखनऊ में कांग्रेस का अधिवेशन हुआ। महात्माजी भी उनमें शामिल हुये। वहाँ आपसे कुछ लोगों ने बिहार में गोरे जमींदारों के अत्याचारों के खिलाफ कुछ बोलने की प्रार्थना की। महात्मा जी ने कहा कि जब तक मैं खुद बिहार की हालत जाकर देख न आऊँ तब तक कुछ बोल नहीं सकता। इसलिये कांग्रेस के बाद १५ अप्रैल सन् १९१७ ई० में आप मुजफ्फरपुर (बिहार) गये। पहले महात्मा जी को बिहार न जाने के लिए सरकार की ओर से एक नोटिस दी गयी, लेकिन जब वे नहीं रुके तब नोटिस वापस ले ली गई। महात्मा जी ने कई जिलों के किसानों की जाँच की! गोरे ठीकेदार किसानों को बहुत तंग करते थे। किसान नील की खेती करते थे। उनसे लगान बहुत लिया जाता था और बेकार में उन्हें परेशान किया जाता था। महात्माजी ने आन्दोलन करके सरकार को मजबूर किया कि वह किसानों को गोरों के जुल्मों से बचाये। सरकार ने एक जाँच कमीशन बैठाया, जिसमें महात्मा जी भी थे। कमीशन की रिपोर्ट सरकार ने मंजूर करली और किसानों पर होने वाला गोरों का अत्याचार बन्द हो गया। कानून बन जाने पर भी महात्मा जी चम्पा-

रन में कुछ दिन रहे। वहाँ रह कर उन्होंने लड़के और लड़कियों के मदरसे खुलवाये।

बम्बई प्रान्त में खेड़ा एक जिला है, १९१८ ई० में वहाँ फसल मारी गई। किसान लगान देने से मुसीबत में पड़े। महात्मा जी खेड़ा में गये और वहाँ के किसानों की हालत देखी और सरकार से प्रार्थना की कि इस साल किसानों का लगान माफ कर दिया जाय, लेकिन सुनवाई नहीं हुई। महात्माजी ने किसानों से कहा—लगान मत दो, चाहे दुख भोगना पड़े। सरकार ने सख्ती की, किसानों को तङ्ग किया लेकिन लगान वसूल न हुआ। अन्त में सरकार को सर झुकाना पड़ा। सत्याग्रह की जीत हुई। सरकार ने यह ऐलान किया कि जो किसान लगान दे सकते हों वे दें और जो न दे सकते हों वे अगले साल दें। इस तरह खेड़ा का बखेड़ा खतम हुआ।

रौलट ऐक्ट

सन् १९१७ ई० में सरकार ने एक कमेटी इसीलिये बैठा ली थी कि वह जाँच करे कि सरकार की जड़ खोदने के लिए कहाँ कहाँ क्या हो रहा है। उनका नाम था 'रौलट कमेटी'। रौलट कमेटी ने सरकार को कुछ ऐसे कानून बनाने की सलाह दी जिससे वह बेडर हो जाय। रौलट बिल कौंसिल के सामने आया। तमाम मेम्बरों ने उसके खिलाफ राय दी। रौलट बिल से सरकार का इरादा राज-

नीतिक आन्दोलन को खतम कर देना था। विरोध करने वालों में नरम गरम दोनों तरह के नेता थे। और महात्मा जी ने रौलट बिल के खिलाफ सत्याग्रह का ऐलान कर दिया और सरकार से कह दिया कि अगर रौलट ऐक्ट न रद्द किया जायगा तो उसके और भी कानून तोड़े जायँगे। लार्ड चेम्सफोर्ड ने महात्माजी को मिलने के लिये बुलाया, लेकिन कोई नतीजा नहीं निकला। एक महीने के अन्दर हर सूबे में सत्याग्रह की सभाएँ बन गईं। प्रेस का कानून भी तोड़ा गया। इस आन्दोलन में हिन्दू-मुसलमान दोनों शामिल हुए।

देश में उस समय बड़ा जोश था। पंजाब में भी आन्दोलन उठ खड़ा हुआ था पंजाब की बागडोर उन दिनों सर माइकेल ओडायर के हाथों में थी। महात्मा जी पंजाब के लिए रवाना हुए। बीच ही में वे गिरफ़्तार कर लिये गये और लाकर बम्बई में छोड़ दिये गये। इसी मौके पर कई जगह गोलियाँ चलीं। लाहौर में गोली चली। कितने ही आदमी मारे गये और घायल हुए। लार्ड चेम्सफोर्ड ने पंजाब में मारशल्ला जारी कर दिया। १३ अप्रैल को जलियान वाला बाग (अमृतसर) में इतनी गोलियाँ चलीं जिसकी याद करके रोंगटे खड़े हो जाते हैं। इसी हत्याकाण्ड के बाद हिन्दू मुसलमानों की एकता की जड़ जमी। हिन्दू-मुसलमान दोनों ने इस कांड का विरोध

किया। पंजाब में बहुत से नेताओं को जेल भेज दिया गया। सत्याग्रह का भी जोर था। इस हत्याकांड के बाद सत्याग्रहियों से भी गड़बड़ी हुई। इसलिये महात्मा जी ने ७२ घंटे का एक उपवास किया और सत्याग्रह को कुछ दिनों के लिए रोक दिया। इसी के बाद महात्मा जी ने 'स्वदेशी व्रत' का आन्दोलन शुरू किया। १६ अक्टूबर सन् १६१६ ई० को महात्मा जी के पंजाब में न घुमने की आज्ञा उठा ली गई। उसी दिन पहला खिलाफत दिवस मनाया गया। महात्मा जी ने पंजाब का दौरा शुरू किया। पंजाब के नेताओं के साथ पण्डित मदनमोहन मालवी, पण्डित मोतीलाल नेहरू आदि भी दौरे में गये। पंजाब के हत्याकांड की जांच की गई और एक रिपोर्ट प्रकाशित की गई। इस हत्याकांड के बाद लोगों ने सोचा—शायद सरकार फिर न्याय करे लेकिन सब की आशाओं पर पानी फिर गया। लोग अपने पैरों आप खड़े होने के लिए तैयार हो गये।

असहयोग

महात्मा गाँधी ने जब यह देख लिया कि सरकार के यहाँ हिन्दुस्तानियों के साथ न्याय करने की कोई सुनवाई नहीं हो सकती, तो १ अगस्त १६२० ईसवी को सरकार से असहयोग करने की तैयारी कर दी गई। यह आन्दोलन इतने जोर का उठा कि सारे हिन्दुस्तान में हड़-

कम्प मच गया। विलायत में हाहाकार छा गया। महात्मा जी ने 'यंग इंडिया' में अपने विचार का प्रचार आरम्भ किया। महामना मालवीय जी, देशबन्धु दास, श्री विपिन-पाल, श्री मुहम्मद अली जिन्ना सब ने कांगरेस के अधि-वेशन में महात्मा जी के असहयोग के मूल प्रस्ताव का विरोध किया। कांगरेस के सभापति लाला लाजपत राय स्वयं प्रस्ताव के कुछ अंशों पर विरुद्ध बोले। लेकिन महात्मा का प्रस्ताव बहुमत से पास हो गया। असहयोग का मूल सिद्धांत यह था (१) खिताबों, अवैतनिक सरकारी कामों और सरकार की ओर से म्युनिसिपैलिटयों और डिस्ट्रिक्ट बोर्डों में नामजदगी का बहिष्कार (२) सरकारी जलसों तथा दरबार का बहिष्कार (३) सरकारी स्कूलों का बहिष्कार (४) सरकारी कचहरियों का बहिष्कार (५) कौंसिलों का बहिष्कार (६) विदेशी चीजों का बहिष्कार और स्वदेशी का प्रचार। नागपुर काँगरेस में महात्मा जी ने काँगरेस पर अपना पूर्ण अधिकार जमा लिया और पुरानी काँगरेस जो नरम-गरम दल वालों से बनी थी, एक दम खत्म हो गई। महात्माजी ने असहयोग के प्रचार के लिए खिलाफत का मामला साथ लेकर सारे देश का दौरा किया। अली-भाइयों ने भी महा-त्माजी का साथ दिया। सारे देश में तूफान आ गया। कितनों ही लड़कों ने पढ़ना छोड़ दिया। राष्ट्रीय विद्यालय खुल गये। कितने ही वकालत छोड़कर आंदोलन में शरीक

हो गये। जगह-जगह विलायती कपड़ों की होली जलाई गई। इलाहाबाद के प्रसिद्ध वकील त्यागमूर्ति पण्डित मोती-लाल नेहरू और बंगाल के देशबन्धु चित्तरंजनदास महा-त्माजी के साथ पूरी तरह से लग गये।

उसी समय हिन्दुस्तान में नये वाइसराय लार्ड चेम्सफोर्ड की जगह लार्ड रीडिंग भारत के वाइसराय होकर आए। देश में आंदोलन का जोर था। पण्डित मदनमोहन मालवीय ने नये वाइसराय और महात्मा जी में समझौता कराने की कोशिश की। मई सन् १९२१ ईसवी में वाइ-सराय और महात्माजी की बातचीत हुई। किन्तु कोई नतीजा नहीं निकला। महात्माजी आंदोलन को अहिंसा-त्मक बनाए रखना चाहते थे। लेकिन इन्हीं दिनों कई जगह हिंसात्मक कार्य भी होने लगे। प्रिन्स आफ वेल्स हिन्दुस्तान में आये थे। राष्ट्रीय व्यक्ति उनके स्वागत का बहिष्कार कर रहे थे और सरकार की ओर से उनके स्वागत की तैयारी हो चुकी थी। प्रिन्स आफ वेल्स के जहाज से उतरते ही बम्बई में बड़ी हड़ताल हुई। इसी सिलसिले में बम्बई में बड़ा दङ्गा हो गया। उधर मालाबार में मोपलों का युद्ध जारी था। प्रिन्स आफ वेल्स जब कलकत्ते पहुँचे तो यहाँ भी हड़ताल मनाई गई, युक्तप्रांत में हड़ताल हुई। देश के बड़े नेता पकड़ कर बन्द कर दिये गये।

चौरीचौरा काण्ड

इसी बीच में अहमदाबाद में कांगरेस का अधिवेशन हुआ। महात्मा जी ने इसको पूर्ण रूप से सफल बनाया। देशबन्धु सी० आर० दास सभापति चुने गये थे, लेकिन वे जेल में थे, इसलिये हकीम अजमल खाँ सभापति बनाए गये। आन्दोलन का जोर और भी बढ़ गया। असहयोग और सत्याग्रह का बोलबाला हो गया। वाइसराय और गाँधी जी में कोई समझौता नहीं हुआ इसलिये काँग्रेस में सत्याग्रह का प्रस्ताव भी पास हुआ। और बारदोली इसका केन्द्र बनाया गया। इसी बीच में १४ फरवरी सन् १९२२ ई० में गोरखपुर जिले में चौरीचौरा का भयानक कांड हो गया। जनता के कुछ लोगो ने, जिनमें कुछ स्वयं-सेवक भी शामिल थे, वहाँ के थाने में आग लगा दी और करीब बाइस पुलिस के सिपाही मारे गये। महात्माजी को इस कांड से बहुत दुख हुआ। वे पूर्णतया आंदोलन को अहिंसात्मक रखना चाहते थे। इसलिये असहयोग और बारदोली में होने वाले सत्याग्रह को स्थगित कर दिया। इसके बाद केवल खद्दर के प्रचार की ओर लोगों में आंदोलन होने लगा।

महात्मा जी की गिरफ्तारी

कुछ दिनों से महात्मा जी की गिरफ्तारी की खबर सुनाई पड़ रही थी। ११ मार्च सन् १९२२ ई० में महात्मा

जी साबरमती आश्रम में गिरफ्तार कर लिये गये और उन्हें छः साल की सादी सजा दे दी गई। दो साल तक वे जेल में रहे। कई लिबरल नेताओं में सरकार से बात-चीत होती रही। एकाएक महात्मा जी जेल में बीमार पड़े और जेल से छोड़ दिए गये। इस बीच में हिन्दुस्तान के राज-नीतिक क्षेत्र में कुछ परिवर्तन हुआ। देशबन्धु दास और पंडित मोतीलाल नेहरू कौंसिलों में जाने के पक्ष में हो गये, महात्मा जी ने भी इनका साथ दिया। उन्होंने 'यंग इण्डिया' का सम्पादन भी जेल जाने के कारण से त्याग दिया था। जेल से वापस आने पर "नव-जीवन' और 'यंग इण्डिया' का सम्पादन महात्मा जी ने फिर शुरू किया, और अपनी बातों का प्रचार बड़े जोर के साथ शुरू किया। पिछले कुछ महीनों से इधर-उधर दंगे होने लगे थे। साम्प्रदायिक दंगे भी शुरू हो गये। महात्मा गांधी इन बातों से बहुत दुखी हुए। उन्होंने देश में शान्ति कायम करने के लिए ११ सितम्बर को २१ दिन का उपवास करने की घोषणा की। यह उपवास हिन्दू मुसलिम एकता और ईश्वर प्रार्थना के लिये शुरू किया गया। उपवास के वक्त महात्मा गाँधी दिल्ली में मौलाना मोहम्मदअली के यहाँ ठहरे थे। दंगे कुछ दिनों के लिए शान्त हो गए।

बेलगाँव काँगरेस

दिसम्बर १९२४ में बेलगाँव में काँगरेस हुई। महा-

रमा जी उसके सभापति चुने गये। इस काँगरेस में हिन्दू-मुसलिम एका का सवाल तय हुआ और कौंसिलों में जाने के लिए गाँधी-दास का समझौता हुआ। विदेशी चीजों के बहिष्कार और अछूतोद्धार का काम इसी काँगरेस में तय हुआ। इसके बाद महात्मा जी ने जबरदस्त दौरा किया। खद्दर और अछूतोद्धार उनका खास काम था। देश में इस वक्त दो पार्टी काँगरेस में दिखाई देने लगी। कुछ लोगों का खयाल हुआ कि महात्मा जी ने आन्दोलन बन्द करके अच्छा नहीं किया। पंडित जवाहर लाल नेहरू, श्रीनिवास अयङ्गर और श्री सुभाषचन्द्र बोस ने 'पूर्णस्वराज' की तैयारी शुरू कर दी। कलकत्ता में सन् १९२८ के दिसम्बर में त्यागमूर्ति पंडित मोतीलाल नेहरू के सभापतित्व में जो काँगरेस हुई उसमें 'पूर्ण स्वराज' का प्रस्ताव लाया गया। काँगरेस में यह बात तय हो गई। यह प्रस्ताव महात्मा जी ने खुद ही काँगरेस के सामने रखा।

इसी बीच में विलायत में मंत्रि-मंडल बदला। बाल्डविन की मिनिस्टरी चली गई और वहाँ की मजदूर पार्टी ने ताकत अपने हाथ में ली। श्री रैमजे मेकडानल्ड प्रधान-मंत्री हुये और श्री वेजउडबेन भारत मंत्री। अब भारत में नये मंत्री-मंडल की वजह से कुछ शान्ति हुई। भारत के वायसराय लार्ड इरविन उन दिनों विलायत में थे। २५ अक्टूबर सन् १९२९ इसवी को लार्ड इरविन इङ्गलैंड से भारत वापस

आये। इधर हिन्दुस्तान में गाँधी जी की नीति से ज्यादा उग्र नीति काँगरेस में चलने लगी खासकर जब से 'पूर्ण-स्वराज्य' का प्रस्ताव काँग्रेस में पास हो गया तब से सरकार से लिबरल नेता आपस में समझौता हो जाने की कोशिश करने लगे। लार्ड इरविन जब भारत में आये तो उन्होंने एक वक्तव्य निकाला और राउँड टेबिल कानफरेन्स बुलाने की घोषणा की और कुछ नरमी की बातचीत शुरू हुई जिससे यह मालूम होने लगा कि सरकार की कड़ी नीति में कुछ तबदीली हो गई है। वायसराय ने महात्मा गाँधी, सर तेजबहादुर सप्रू, पं० मोतीलाल नेहरू, श्रीयुत पटेल आदि नेताओं को बुलाकर बातचीत की और यह भी कहा कि विलायत में राउंड टेबिल कानफरेंस होगी, उसमें हर एक नेता को अपनी राय देने का पूर्ण हक होगा और सरकार उस पर विचार करेगी। काँग्रेस की ओर से महात्मा गाँधी पं० मोतीलाल नेहरू आदि ने कहा कि यदि सरकार अपने वादे को पूर्ण करने का वादा करे कि हिन्दुस्तानियों को ब्रिटिश गवनमेंट के भीतर रहकर स्वराज दे दिया जायगा तो काँग्रेस राउँड टेबिल कानफरेंस में शामिल हो सकती है, वरना नहीं। लार्ड इरविन ने इस पर कोई निश्चित राय नहीं दी। इससे यह कानफरेंस खतम हो गई।

लाहौर काँगरेस

इसका फल यह हुआ कि देश में 'पूर्णस्वराज' का

और भी जोर हो चला और आन्दोलन बूढ़ों के हाथ मे निकल कर 'युवकों' के हाथ में चला आया। दिसम्बर १९२९ ईसवी में लाहौर में काँगरेस हुई। पं० जवाहर लाल नेहरू सभापति चुने गये। काँगरेस के इस अधिवेशन से लिबरल नेता राउँड टेबिल कानफरेंस में भाग लेने के पक्ष में होगये और काँगरेस इसके विरुद्ध। महात्मा जी ने 'यङ्ग इन्डिया' में इस बात को पूरी तरह से समझाया और सरकार को कुछ शर्तें लिखीं कि शर्तें यदि मंजूर कर ली जाँय तो काँग्रेस राउँड टेबिल कानफरेंस में शरीक हो सकती है वरना फिर सत्याग्रह शुरू होगा।

यह शर्तें महात्मा जी ने ब्रिटेन के प्रधान मन्त्री श्री रेमजे मेकडानल्ड के पास भेजी थीं। जब इन शर्तों पर कोई समझौता नहीं हुआ तो महात्मा जी ने अहिंसात्मक ढङ्ग से सत्याग्रह करने की घोषणा की। हिन्दुस्तान के इतिहास में गाँधी जी के उस सत्याग्रह से फिर आन्दोलन शुरू हुआ। १५ फरवरी सन् १९३० में अहमदाबाद में काँगरेस की वर्किङ्ग कमेटी की बैठक हुई। कमेटी ने महात्मा जी के हाथ में पूरा काम सौंप दिया और यह भी कहा गया कि जैसा चाहें देश को सत्याग्रह के लिये तैयार करें। सत्याग्रह करने के पहले महात्मा जी ने वायसराय को खत लिखा। खत को एक अङ्गरेज युवक, जो साबरमती आश्रम में रहता था, वायसराय के पास ले गया। ४ मार्च सन् १९३० ईसवी को वह

खत दिल्ली पहुँचा। वायसराय ने गाँधी जी को जो जवाब दिया उससे कोई नतीजा नहीं निकला, इसलिये महात्मा जी ने साबरमती आश्रम के विद्यार्थियों के साथ 'नमक कानून' तोड़ने के लिए पैदल यात्रा की तैयारी की। यह 'दांडी-यात्रा' के नाम से मशहूर है। नमक कानून तोड़ने के लिए महात्मा जी ने पैदल यात्रा की। इस पैदल यात्रा का फल यह हुआ कि आन्दोलन सारे देश में फैल गया और नमक कानून को तोड़ने का काम शुरू हो गया। रास्ते में जो गाँव पड़ते थे, महात्मा जी सब को खद्दर पहनने, शराब न पीने का उपदेश देते जाते थे। इस यात्रा में स्त्रियाँ भी शामिल हुईं। साबरमती आश्रम पुरुषों से खाली हो गया। महात्मा जी ने कहा कि या तो हम अपने काम में कामयाब होकर लौटेंगे या हमारी लाश समुद्र में तैरती नजर आवेगी। सूरत, बीरमद और नवसारी में उन्होंने इस मौके पर जो व्याख्यान दिये वह बड़े जबरदस्त थे। ५ अप्रैल सन् १९३० ईसवी को महात्मा जी दांडी पहुँचे। श्रीमती सरोजिनी नायडू उन्हें देखने के लिए वहाँ पहुँची। महात्मा जी ने जनता से यह अपील की कि अगर वे पकड़े जायँ तो उनके बाद अब्बास तैय्यब जी के कहने के मुताबिक काम किया जाय और अगर वे भी पकड़े जायँ तो श्रीमती सरोजिनी नायडू इस काम को सँभालेंगी। उसी वक्त 'राष्ट्रीय सप्ताह' मनाने की घोषणा की गई। स्वयं-

सेवकों ने नमक कानून तोड़ा। कलकत्ता, बम्बई आदि हिन्दुस्तान के बड़े बड़े शहरों में नमक सत्याग्रह शुरू हो गया। लोगों ने जगह-जगह नमक बनाना शुरू किया। सरकार की ओर से गिरफ़्तारियाँ शुरू हो गईं। श्री वल्लभभाई पटेल, श्रीमणिमाल कोठारी, श्रीनरीमैन, श्री जयरामदास दौलतराम, श्री जमनालाल बजाज, श्री सेन गुप्त, पंडित जवाहरलाल नेहरू गिरफ़्तार कर लिये गये। कांग्रेस के सभापति पंडित जवाहरलाल नेहरू की गिरफ़्तारी से आंदो-लन और भी जोर से चलने लगा। सारे देश में हलचल मच गई। सैकड़ों स्वयंसेवक नमक सत्याग्रह में पकड़ कर जेल भेजे जाने लगे। आन्दोलन का जोर देखकर सरकार ने 'बङ्गाल आर्डिनेंस' और 'प्रेस आर्डिनेंस' जारी किये जिससे अखबार बन्द हो गये। कितनों ही से जमानतें मांगी गईं। 'यङ्ग इंडिया' और 'नव जीवन' भी बंद हो गया।

श्री पटेल का इस्तीफा

उसी समय एसेम्बली के प्रेसिडेन्ट विट्ठलभाई पटेल ने प्रेसीडेन्टी से इस्तीफा दे दिया और वे भी आंदोलन में शरीक हो गये। ४ मई सन् १९३० ई० को महात्मा जी दांडी कैम्प में गिरफ़्तार कर लिए गये और यरवदा जेल पहुँच गये। महात्मा जी की गिरफ़्तारी से हिन्दुस्तान में २४ घन्टे की हड़ताल मनाई गई। योरप के और मुल्कों में भी महात्मा जी की गिरफ़्तारी से हलचल मच गई। महात्मा

जी के बाद अब्बास तैय्यब जी और श्रीमती सरोजिनी नायडू भी नमक सत्याग्रह में स्वयंसेवकों के साथ पकड़ ली गईं। इसी बीच में इलाहाबाद में काँग्रेस वर्किंग कमेटी की बैठक हुई और यह तय हुआ कि नमक सत्याग्रह जारी रखा जाय। इससे सत्याग्रह और जोर पकड़ गया। देश के करीब सभी नेता जेलों में बन्द कर दिये गये। २६ जून १९३० को वर्किङ्ग कमेटी भी गैरकानूनी करार दी गई।

सप्रू जयकर समझौता

सर तेजबहादुर सप्रू और जयकर की कोशिश से समझौता होने लगा। यरवदा जेल में जगह-जगह के जेलों से कैदी नेता ले जाये गये। राउँड टेबुल कानफरेंस की कार्यवाही आगे बढ़ रही थी। प्रधान मंत्री श्रीरमजे मेक-डानल्ड ने एक लम्बा वक्तव्य निकाला और कहा कि काँग्रेस राउंड टेबुल कानफरेंस में भाग ले। ५ जनवरी सन् १९३१ ईसवी को भारत के वायसराय लार्ड इरविन ने एक वक्तव्य दिया और महात्मा जी जेल से छोड़ दिये गये और वर्किंग कमेटी कानूनी करार दे दी गई। पं० मोती-लाल नेहरू भी बीमारी की वजह से जेल से छोड़ दिये गये। वे और बीमार पड़ गये। जेल से छूटते ही महात्मा जी पंडित जी को देखने के लिये इलाहाबाद आये। इसी बीच में पंडित मोतीलाल नेहरू का स्वर्गवास हो गया। गाँधी आन्दोलन को नेहरू जी के न रहने से बड़ा धक्का लगा।

इसके बाद महात्माजी ने वायसराय से मिलने के लिए उनको एक खत लिखा। १६ फरवरी १६३१ ई० को महात्मा जी वायसराय से मिलने के लिये दिल्ली गए। १५ दिन लगातार बातचीत के बाद गाँधी जी और वायसराय के बीच समझौता हुआ और यह भी तय हुआ कि वह राउंड टेबुल कानफरेंस में शरीक होंगे। महात्मा जी अहमदाबाद गये। 'यंग इंडिया' और 'नवजीवन' का प्रकाशन फिर शुरू हुआ। गाँधीजी के इस समझौते से देश के साम्यवादी लोग उनसे नराज हो गये। वे उस वक्त अपनी बात समझाने के लिए जहाँ गये वहीं—खासकर बम्बई में—साम्यवादियों ने अपनी नाराजगी प्रगट की। उन्हीं दिनों लाहौर षड्यंत्र के सम्बन्ध के और असेम्बली में बम फेंकने के कारण श्री भगत सिंह और श्री बटुकेश्वर दत्त का मामला भी वायसराय के सामने पेश था। इनमें से एक को फाँसी और दूसरे को कालेपानी की सजा का हुक्म हुआ। साम्यवादी चाहते थे कि अन्य राजनैतिक कैदियों के साथ यह भी छोड़ दिये जायँ। लेकिन भगत सिंह को फाँसी हो गई। इससे साम्यवादी और ज्यादा महात्मा जी से रुष्ट हो गये।

करांची काँगरेस

२५ मार्च सन् १६३१ को करांची में काँगरेस का जलसा था। महात्मा गाँधी काँगरेस में पहुँचे। श्रीवल्लभ-

भाई पटेल काँगरेस के सभापति चुने गये। साम्यवादी काँग-रेस से नाराज हो गये थे। इसलिए काँगरेसी नेताओं के खिलाफ 'लाल' और 'काले झंडे' निकाल कर उन लोगों ने विरोध प्रगट किया। इस कांग्रेस अधिवेशन का अच्छी तरह हो जाना मुश्किल हो गया। पचास हजार आदमियों की भीड़ में महात्मा जी ने साम्यवादियों से कहा कि जब तक ईश्वर मेरी रक्षा करेगा तब तक मुझे कोई नहीं मार सकता। इसके बाद महात्माजी ने कहा—"नवजवान कांग्रेस के अधिवेशन को सफलता के साथ नहीं होने देना चाहते। वे भगतसिंह को वापस नहीं ला सकते। इसका मतलब यह है कि लोग मुझे नहीं चाहते और वे चाहते हैं कि मैं काँग्रेस से अलग हो जाऊँ। मेरा विश्वास अहिंसा पर है। खाते-पीते, सोते-जागते मैं अहिंसा से ही स्वराज्य प्राप्त करने का स्वप्न देखता हूँ।' इसके बाद महात्मा जी ने नवजवान सभा के नेता श्रीसुभाषचन्द्र बोस से बातचीत की। श्री-सुभाषचन्द्र बोस ने साम्यवादियों की ओर से गाँधी जी को विश्वास दिलाया कि वह काँग्रेस का नुकसान नहीं करना चाहते। इसके बाद काँग्रेस बड़ी शान के साथ हुई। इसी काँग्रेस में यह प्रस्ताव पास हुआ कि महात्मा जी काँग्रेस की ओर से राउंड टेबुल कानफरेंस में जावें और पूर्ण स्वराज्य को सामने रख कर समझौता करें। महात्मा जी ने काँग्रेस को यह विश्वास दिलाया कि वे हर तरह से काँग्रेस की रक्षा करेंगे।

भारत में नये वायसराय लार्ड विलिंगटन आ गए थे। उनसे महात्मा जी ने भेंट की। उन्होंने बारडोली आदि की जाँच के कई सवाल उनके सामने रखे। आखिर में ५ मार्च सन् १९३१ को वायसराय और गाँधी जी में समझौता हो गया। वे राउंड टेबुल कानफरेंस में शामिल होने के लिये लन्दन को रवाना हो गये। उनके साथ पंडित मदनमोहन मालवीय, श्रीमती सरोजिनी नायडू आदि भी कानफरेंस में शरीक होने के लिए गईं।

राउंड टेबुल कानफरेंस

राउन्ड टेबुल कानफरेंस में महात्मा जी ने बड़ा ही अच्छा व्याख्यान दिया। उस व्याख्यान में आपने काँग्रेस का इतिहास बतलाते हुए साबित किया कि आजकल हिन्दुस्तान में काँग्रेस सबसे बड़ी संस्था है और उसकी आज्ञा से लाखों आदमी देश पर अपना सब कुछ निछावर करने के लिये तैयार हैं। हिन्दुस्तान में सात लाख गाँव हैं। वहाँ दरिद्रता छाई है। इन गरीबों की काँग्रेस ही आधार है, हिन्दू मुसलमान और सिख इन तीनों जातियों को जो निर्णय पसन्द हो, काँग्रेस उसे मंजूर कर लेगी। अल्प-संख्यक जातियों के लिये पृथक निर्वाचन को काँग-रेस कभी मंजूर नहीं करेगी। मैं हरिजनों का हित करने वाला हूँ। बिना उनकी भलाई के मेरी भलाई नहीं है। मुसलमान हमेशा मुसलमान रहेगा, सिक्ख हमेशा सिक्ख

ही रहेंगे, लेकिन अछूत हमेशा अछूत न रहेंगे। काँगरेस अछूतों के लिए सब कुछ कष्ट सहने के लिये तैयार है। अछूत भाई मुसलमान बन जायँ या ईसाई, इसे मैं सह लूँगा लेकिन गाँवों में हिन्दू प्रजा अलग अलग होकर रहे, मैं कभी नहीं सह सकता। यदि हिन्दू धर्म में अस्पृश्यता जीती रह जाय, इससे तो मेरा मर जाना ज्यादा बेहतर है। चाहे सारी दुनिया खिलाफ हो जाय लेकिन मैं अकेला ही अछूतों की अलहदगी को मरते दम तक विरोध करता रहूँगा।

महात्मा जी की गिरफ़्तारी

गोलमेज कानफरेंस से लौट कर महात्मा जी हिन्दुस्तान में आये। उन्होंने देखा कि दमनचक्र बड़े जोरों का चल रहा है। खान अब्दुल गफ़्फार खाँ, पं० जवाहरलाल नेहरू और श्रीयुत शेरवानी आदि जेल में पड़े हुए हैं। बम्बई के आजाद मैदान में महात्मा जी ने एक व्याख्यान दिया और सरकार से यह पूछा कि आखिर हिन्दुस्तान में दमन चक्र क्यों चल रहा है। आपने यह भी कहा कि हमारे अछूत भाई कुछ हमसे नाराज हैं। वे चाहें तो मेरा शरीर समुद्र में टुकड़े-टुकड़े काट कर डाल दें, मुझे तनिक भी दुःख न होगा।

इसके बाद ही महात्मा जी ने उस वक्त के वाइसराय लार्ड विलिंगटन को एक पत्र लिखा और उसका जवाब माँगा।

वाइसराय लार्ड विलिंगटन को महात्मा जी का पत्र उचित नहीं जान पड़ा। महात्मा जी बम्बई में 'मणी भवन' में सोते हुए गिरफ्तार कर लिये गये और यरवदा जेल में भेज दिये गये।

अछूतों के लिये उपवास

सन् १९३२ में गोलमेज में होने वाले निर्णय के संबंध में भारत मंत्री के नये शासन विधान का घोषणापत्र प्रकाशित हुआ। महात्मा जी ने उसे बड़े ध्यान से पढ़ा। घोषणा पत्र में महात्मा जी ने देखा कि अछूतों को हिंदुओं से अलग कर दिया गया है और हिन्दुओं से पृथक करके अछूतों को अधिकार दिये गये हैं। यह बात महात्माजी को कत्तई पसंद नहीं आई। जब अछूत स्वयं हिन्दू हैं तो उन्हें हिन्दुओं से अलग करने का क्या मतलब है, इस बात पर महात्मा जी बहुत दुखी हुए। उस रात को महात्माजी जागते रहे और यह सोचते रहे कि किस तरह शासन-विधान के इस निर्णय का प्रतिकार किया जा सकता है। दूसरे दिन उन्होंने उस वक्त के भारत मन्त्री सर सैमुएल होर के पास एक पत्र भेजा और यह लिखा कि अगर आप अछूतों को हिन्दुओं से अलग करके निर्वाचन की आज्ञा देंगे तो मैं आमरण उपवास करूँगा। यह उपवास मैं सिर्फ नमक और जल के साथ करूँगा। अगर आप अपने विचार को बदल दें तो मैं उपवास छोड़ दूँगा। सर

सैमुएल होर ने महात्माजी के लिखने पर अपना निर्णय नहीं बदला। इसलिये उन्होंने आमरण उपवास की घोषणा कर दी। देश के तमाम नेता यरवदा जेल में पहुँचे और महात्मा जी से उपवास न करने की प्रार्थना की लेकिन वे अपने प्रण पर डटे रहे। विलायत और योरप के बड़े २ नेताओं ने महात्माजी को तार दिया कि वे ऐसा प्रण न करें, लेकिन उन्होंने आत्मा के खिलाफ उपवास करना बंद नहीं किया। नेताओं ने सरकार को सलाह दी कि महात्मा जी जेल से छोड़ दिये जायँ लेकिन महात्मा जी ने कहा कि उपवास के दिनों में उन्हें जेल में ही रहने दिया जाय। उस वक्त जेल में उनसे हर नेता को मिलने की आज्ञा दे दी गई, इस उपवास के कारण भारत में अनेकों नगरों में देवमन्दिर अछूतों के लिये खुल गये। इस प्रकार पांच दिन तक उपवास करने के बाद और नेताओं की दौड़-धूप करने से, अछूतों का पृथक निर्वाचन बन्द हो गया। महात्मा जी ने अपना उपवास बन्द कर दिया और तुरन्त वे जेल से भी छोड़ दिये गये।

मन्दिर-प्रवेश

जेल से छूटने के बाद महात्मा जी अस्वस्थ हो गये। स्वास्थ्य ठीक होते ही वे हरिजनों के सुधार में फिर लग गये। दिसम्बर सन् १९३२ ई० में महात्मा जी ने हरिजनों को मन्दिर में प्रवेश करने का आन्दोलन प्रारंभ किया।

दक्षिण भारत में गुरुवयूर का प्रसिद्ध मन्दिर है। उसमें हरिजनों को दर्शन करना मना था। महात्मा जी ने मन्दिर में हरिजनों को दर्शन करने का अधिकार देने के लिये अपने विचार प्रगट किये। मन्दिर के संचालक श्री जमोरिन ने इनकार किया तो महात्मा जी ने घोषणा की कि अगर मन्दिर हरिजनों के लिये न खोला गया तो मैं उपवास करूँगा। महात्मा जी के इस आन्दोलन का फल यह हुआ कि देश में बहुत से मन्दिर हरिजनों के लिये खुल गये। गुरुवयूर के मन्दिर में भी हरिजन दर्शन करने लगे। महात्मा जी ने जून १९३३ ई० में अपना २१ इक्कीस दिन का उपवास समाप्त किया। उस वक्त महात्मा जी को हरिजन कार्य ही करना ज्यादा अच्छा मालूम हुआ। नये शासन-विधान की घोषणा हो चुकी थी। देश के नेताओं का ध्यान इसी कारण बँट गया। अनेक दल संगठित हो गये। काँगरेस के काम करने वाले कई वर्षों से परेशान हो गये थे। लार्ड विलिंगडन ने राष्ट्रीय आन्दोलन को दबाने का अच्छा प्रयत्न किया। इन्हीं बातों के परिणाम स्वरूप महात्मा जी ने ५ अगस्त सन् १९३४ ई० को सत्याग्रह आन्दोलन स्थगित कर दिया। वे अपनी ताकत को हरिजन सेवा की ओर लगाने लगे।

देश का दौरा

इसके बाद महात्मा जी ने देश का दौरा शुरू किया।

देश में गरीबों, किसानों और आम लोगों की गरीबी कैसे दूर हो सकती है, इस बात का घूम-घूम कर संदेश देने लगे। उन दिनों महात्मा जी ने सारे देश में घूमकर लोगों की इच्छा और मनोवृत्ति का परिचय प्राप्त किया। वे जानना चाहते थे कि जनता आगे आंदोलन में भाग लेने के लिये कहाँ तक तैयार है।

इस प्रकार महात्मा जी ने देश में घूमकर जनता की नब्ज टटोली और किसानों को संगठित करने के लिये रास गाँव को, जो पूना के करीब है, सत्याग्रह और असहयोग आन्दोलन का केन्द्र बनाया।

रास सत्याग्रह

इस सत्याग्रह का मकसद सिर्फ यह था कि किसानों में जागृति उत्पन्न की जाय। महात्मा जी के साथ कई स्वयंसेवक और सत्याग्रही रास गाँव की ओर सत्याग्रह करने के लिये चल पड़े। किन्तु सन् १९३३ ई० में सितम्बर में वे गिरफ़्तार कर लिये गये और पूना में ही लाकर रखे गये। लेकिन महात्मा जी पूना में भी नहीं रुके और वहाँ से भी सरकारी हुक्म न मानकर बाहर आये। किन्तु फिर गिरफ़्तार कर लिये गये। पूना में महात्मा जी पर हुक्म जारी किया गया कि वे बिना सरकारी आज्ञा के पूना से बाहर न जावें, लेकिन महात्मा जी ने हुक्म नहीं माना।

इस गिरफ्तारी के बाद महात्मा जी को एक वर्ष की सजा दे दी गई।

देश की दशा उस समय खतरे में थी। हिंसाकांड भी कई स्थानों पर हुये। महात्मा जी को इससे बहुत दुख हुआ। वह अहिंसा पर विश्वास करने वाले हैं। कई वर्षों से बराबर लड़ाई जारी रहने के कारण जनता का चित्त उद्विग्न हो गया था। कई नेता जेल में थे और कई बाहर। उनमें भी मतभेद होने लगा। तात्पर्य यह है कि महात्मा जी ने यह अनुभव किया कि आंदोलन फिलहाल स्थगित कर देना चाहिये, कुछ विश्राम लेने की आवश्यकता है। महात्मा जी जेल से छूटकर साबरमती आश्रम में आये। उनका चित्त खिन्न हो उठा था। उन्होंने साबरमती आश्रम को तोड़ डालने का निश्चय किया और किसी निर्जन स्थान में तपस्या करने के लिये चिंता करने लगे। उन्होंने अपनी कार्यप्रणाली में कुछ परिवर्तन करने के लिए भी सोच लिया। यह समाचार जब महात्मा जी के अनन्य भक्त सेठ जमनालाल बजाज ने सुना तो वे अत्यन्त दुखी हुये। वे महात्मा जी के पास गये और बड़ी प्रार्थना-विनय से उन्हें अपने स्थान वर्धा ले गये। सेठ जी ने महात्माजी के लिये सेगाँव नामक गाँव में एक सुन्दर झोपड़ी बनवा दी। महात्माजी वहीं रहने लगे। कुछ दिनों में सेगाँव राजनैतिक हलचलों का केन्द्र बन गया।

कौंसिल प्रवेश

इधर साम्यवादियों का जोर बढ़ने लगा। उन लोगों की धारणा हुई कि गाँधी जी के आन्दोलन से देश की जागृति तो हुई लेकिन कोई क्रियात्मक कार्य नहीं हो रहा है। आन्दोलन का रुख बदल जाने से कांग्रेस में भी ऐसे लोग दिखाई देने लगे जो कौंसिल में जाने के पक्ष में अपनी राय देने लगे और इस राय के लोगों की संख्या काफी बढ़ चली। साम्यवादी लोग इस राय के विरुद्ध थे। बंगाल, विहार और संयुक्त प्रान्त के अनेक नेताओं ने कौंसिल प्रवेश के पक्ष में अपनी राय दी। पं० जवाहरलाल जी नेहरू जेल से बाहर आए और स्वास्थ्य सुधार के लिये विलायत चले गये। वे पहले स्वयं कौंसिल के पक्ष में नहीं थे। गाँधी जी के अनुयायी शांत वातावरण की ओर विशेष झुक रहे थे। नवीन-सुधार पर वे कार्य करने के लिये प्रयत्न करने लगे। पंडित जवाहरलाल नेहरू महात्मा जी से मिले और देश की डाँवाडोल परिस्थिति पर विचार विनिमय किया। अन्त में यह निश्चय हुआ कि कौंसिल प्रवेश का आन्दोलन प्रारम्भ हो।

काँगरेस की वर्किङ्ग कमेटी की बैठक हुई। उसमें यह प्रस्ताव पास हुआ। इस प्रस्ताव से देश में कुछ काँगरेस भक्तों में असन्तोष उत्पन्न हुआ और कुछ में सन्तोष। पं० जवाहरलाल नेहरू सभापति थे। महात्मा जी के अनुयायी

और वे स्वयं यह चाहते थे कि क्रियात्मक कार्य किया जाय और कौंसिलों में जाकर नवीन विधान तोड़ा जाय। महात्माजी ने कांगरेस से अपने को एकदम अलग कर लिया और किसी तरह का भी निजी अधिकार उन्होंने काँगरेस पर नहीं रखा। सेगाँव में उन्होंने अपने रहने का केन्द्र बनाया, लेकिन फिर भी काँगरेस के अधिकारी बिना गाँधी जी के परामर्श के कोई भी काम नहीं करते थे। महात्माजी भी अपने सत्परामर्शों से काँगरेस के कार्य को निर्दोश बनाये रहते थे।

अनेक राजनैतिक अड़चने पड़ीं। कौंसिलों का चुनाव हुआ, जिसमें आठ सूबों में काँगरेस का बहुमत हुआ। लेकिन प्रांतीय गवर्नरों, वाइसराय तथा काँगरेस के बीच थोड़ा सा मतभेद हो गया, इसी कारण मिनिस्टरों का चुनाव नहीं हुआ। आखिरकार महात्मा जी की प्रेरणा से समझौता हुआ और काँगरेस ने आठ प्रान्तों में मंत्रिमण्डल का निर्माण किया। इन मंत्रिमण्डलों को शासन व्यवस्था की नीति गाँधी जी ने अनेक लेख लिखकर निर्देशित की। शराबबन्दी और ग्रामसुधार तथा अन्य लोकोपकारी कार्य उनके ही आदेश से प्रारम्भ हुए।

बन्दियों का छुटकारा

महात्मा जी ने इन कार्यों के अतिरिक्त वर्षों से जेल में पड़े हुए बन्दियों के छुटकारे के लिए भी अनेक प्रयत्न

किये। बङ्गाल के राजबन्दियों के लिए बड़ी कोशिशें कीं और इस कार्य में उन्हें सफलता भी मिली। आठ प्रान्तों के, जिसमें कांग्रेस का राज था, राजबन्दी धीरे-धीरे मुक्ति कर दिये गये। अन्य प्रान्तों के राजनैतिक बंदियों को मुक्ति दिलाने में भी सफलता मिली।

हरिपुरा-कांग्रेस श्रीसुभाषचन्द्र बोस के सभापतित्व में हुई। महात्मा जी ने यहाँ खादी और उद्योग प्रदर्शिनी का उद्घाटन बड़े समारोह के साथ किया। महात्मा जी के प्रयत्न से आज देश में अनेक उद्योग धन्धे चल रहे हैं और उसके लिये वे प्रयत्न भी करते थे।

राजकोट

१९३९ में देशी रियासतों में जागृति के चिह्न दिखाई पड़ने लगे। प्रजा ने अपने शासकों के निरंकुश शासन का तीव्र प्रतिरोध करना प्रारम्भ किया। इस हलचल का अधिक जोर धेनकल, जयपुर, राजकोट आदि में हुआ। जनता उत्तरदायी शासन की माँगें शासकों के सम्मुख रख रही थी। इस ओर काँग्रेस को भी विशेष रूप से ध्यान देना पड़ा। विशेष कर राजकोट का मामला बड़ा पेचीदा मालूम पड़ा, जिसमें गाँधी जी ने स्वयं हस्तक्षेप किया। जनता वहाँ के भूतपूर्व दीवान और मुख्य सलाहकार दरबार वीरावाला की निरंकुश कार्यवाहियों से बहुत असन्तुष्ट थी। महाराज ने राज्य में उत्तरदायी शासन विधान की

स्थापना करने की घोषणा की थी, किन्तु इस विधान को निश्चित करने वाली समिति के सम्बन्ध में विवाद उपस्थित हो गया था। दरबार वीरावाला महाराज की घोषणा की जो व्याख्या कर समिति का संगठन कर रहे थे, वह जनता को स्वीकार नहीं था। जनता दूसरा अर्थ लगा रही थी। इस सम्बन्ध में बड़ी उत्तेजना फैल रही थी। इस सम्बन्ध में गाँधी जी स्वयं राजकोट गये, किन्तु सुलझाने के प्रयत्न में असफल होकर उन्होंने आमरण अनशन प्रारंभ कर दिया। गाँधी जी की इतनी दृढ़ता के कारण वाइसराय ने हस्तक्षेप कर संघ न्यायालय के प्रधान न्यायाधीश को पंच बनाया। इस पर गाँधी जी ने अनशन छोड़ दिया। प्रधान न्याया-धीश ने जनता की राय के पक्ष में अपना निर्णय दिया। इस पर दरबार वीरावाला और महाराजा को कुछ क्षोभ हुआ और फिर कानूनी अड़चनें डाली जाने लगीं। अंत में गाँधी जी ने यह अनुभव किया कि राजकोट दरबार पर इस निर्णय को लादने की अपेक्षा महाराजा वा दरबार वीर-बाला को स्वयं ही अपनी उदारता का परिचय देने का अवसर देना उचित है। इसलिए उन्होंने निर्णय के जोर पर समिति स्थापित कराने की जनता की मांग वापिस करा दी। राजकोट दरबार ने अपनी इच्छा से विधान परिषद् स्थापित करने की समिति संगठित की और इस प्रकार वहाँ का मामिला शान्त हो गया।

सुभाषचन्द्र बोस

१६३६ में त्रिपुरा की जो काँग्रेस होने वाली थी उसका सभापति गाँधी जी ने पट्टाभि सीतारमैया को बनवाना चाहा, किन्तु चुनाव में उनके विरुद्ध सुभाषचन्द्र बोस बहुमत से चुने गये, जिसे गाँधी जी ने अपनी हार मानी। चुनाव प्रतिनिधियों की वास्तविक इच्छा का परिणाम था वा नहीं, यह बात त्रिपुरी के अधिवेशन मे स्पष्ट हो गयी। लोग यह आशा कर रहे थे कि गाँधी जी की इच्छा मालूम होने पर सुभाष बाबू त्यागपत्र देंगे। किन्तु उन्होंने ऐसा न कर रोग-शय्या पर होते हुए भी काँग्रेस में भाग लिया। उस समय कार्य कारिणी समिति के सब सदस्यों ने भी त्याग पत्र दे दिया। किन्तु अधिवेशन में प्रतिनिधियों ने बङ्गाल के प्रतिनिधियों के बहुत ऊधम मचाने और अभद्र रूप दिखाने पर भी गाँधी जी और भूतपूर्व कार्य-कारिणी समिति के सदस्यों के प्रति विश्वास का प्रस्ताव स्वीकृत किया। साथ ही सभापति ने एक प्रस्ताव द्वारा यह आदेश दिया कि वह गाँधी जी की राय की पूर्ण विजय थी। कुछ समय तक अशांति रहने के बाद अधिवेशन के बाद सुभाष बाबू को त्यागपत्र देना पड़ा और कांग्रेस के अनुशासन को भी भङ्ग करनेवाली उनकी कार्यवाहियों के कारण उन्हें कांगरेस के कोई उत्तरदायी पद ग्रहण न करने देने के लिए भी कार्यकारिणी समिति गाँधी जी

के परामर्श से प्रस्ताव स्वीकृत किया। यह गाँधी जी के लिए बड़ी दुखद बात थी, किन्तु काँग्रेस के अनुशासन की रक्षा के लिए उन्हें ऐसा करना ही पड़ा।

योरोपीय महायुद्ध

सितम्बर १९३९ में द्वितीय महायुद्ध का श्रीगणेश हुआ। इससे पहिले जब युद्ध आसन्न दिखाई पड़ रहा था, गाँधी जी ने हिटलर से शान्तिपूर्ण उपायों से काम लेने की अपील की थी। युद्ध छिड़ने पर उन्होंने इङ्गलैंड और फ्राँस के साथ अपनी सहानुभूति प्रकट की, परन्तु एक अहिंसक के नाते उन्होंने युद्ध में कोई भी योग देने से इनकार कर दिया।

जुलाई १९४० ई० में उन्होंने युद्ध मानवजाति के लिए एक अभिशाप मानते हुए अंगरेजों से युद्ध बन्द कर देने की अपील की, इसलिए नहीं कि वे लड़ने से थक गए थे, बल्कि इसलिए कि युद्ध वस्तुतः एक बुरी चीज है।

१९४१ ई० में भाषण तथा लेखन स्वतन्त्रता के लिए गाँधी जी का व्यक्तिगत सत्याग्रह चला। यह सत्याग्रह युद्ध काल में सरकार को परेशान करने के लिए नहीं वरन् भारत के प्रति उनकी नीति के विरुद्ध-देश का विरोध प्रकट करने के लिए चलाया गया था।

बहुत से नेता जेल में गये, परन्तु अन्त में सरकार ने सब को छोड़ दिया।

क्रिप्स का आगमन

सारे संसार में लड़ाई जोरों से चल रहा था। जर्मनी और जापान, दोनों ही हर एक ओर अंगरेजों को मैदान छोड़ने के लिए विवश कर रहे थे। देश पर देश अंगजों के हाथ से निकलते जा रहे थे और अंगरेज मैदान छोड़ कर भागते जा रहे थे। युद्ध की बिगड़ी हुई हालत को देखकर आखिर अंगरेजों को भारतीयों को मिलाने की सूझी और उन्होंने लन्दन से एक चतुर और दुनिया में नाम के लिए एक भलेमानस अंगरेज—क्रिप्स को एक खरीता लेकर हिन्दुस्तान में भेजा। मिस्टर क्रिप्स ने हिन्दुस्तान में आकर हर एक पार्टी के नेताओं से मुलाकात की, और हर एक के सामने उन्होंने अपना खरीता रक्खा। महात्मा गाँधी भी बुलावा पाकर क्रिप्स से मिलने के लिये नई दिल्ली गए। नई दिल्ली में महात्मा गाँधी की क्रिप्स से एक बार मुलाकात हुई। महात्मा गाँधी ने थोड़ी देर की मुलाकात में ही मिस्टर क्रिप्स के खरीते के असली मतलब को समझ लिया और उन्होंने कांगरेस कमेटी की बैठक में पहुँच कर कमेटी को यह सलाह दी, कि क्रिप्स के खरीते को स्वीकार न किया जाय, क्योंकि इसे स्वीकार

कर लेने से देश की बहुत बड़ी हानि होगी। काँगरेस ने भी उस खरीते को अस्वीकार कर दिया।

अखिल भारतीय काँगरेस कमेटी की बैठक

यह वह समय था, जब सारे संसार में युद्ध की आग फैल गई थी। भारतवर्ष की सीमा के पास भी युद्ध हो रहा था। सरकार बड़े जोरों में आदमियों को सेना में भरती कर रही थी, और गाँव-गाँव मे चन्दे के रूप में रुपये वसूल किए जा रहे थे। उन्हीं दिनों १६४२ के अगस्त महीने में बम्बई में अखिल भारतीय काँगरेस कमेटी की बैठक हुई। इस बैठक के पहले देश में तरह-तरह के अनुमान किये जा रहे थे। लोगों का ख्याल था, कि इसके बाद कांगरेस अपना आन्दोलन अवश्य शुरू करेगी। अतः सरकार के भी कान खड़े होगये थे, और वह कई महीने पहले से ही कांगरेस की गति को बड़ी सावधानी से देख रही थी। इस बैठक में देश के बड़े-बड़े नेता सम्मिलित हुये।

८ अगस्त को बम्बई में अखिल भारतीय कांगरेस कमेटी की बैठक हुई। इस बैठक में महात्मा गाँधी ने पूरी तरह से भाग लिया। "भारत छोड़ो" प्रस्ताव इसी कांगरेस में पास हुआ।

नेताओं की गिरफ्तारी

१६४२ में ६ अगस्त को जब सारा देश इस बात की बाट देख रहा था, कि देखें बम्बई में काँगरेस ने कौन सा

प्रस्ताव देश के सामने रखा है तब लोगों को खबर मिली कि ८ अगस्त की रात में ही देश के सभी बड़े बड़े नेता एक साथ ही गिरफ्तार कर लिये गये। महात्मा गाँधी भी बिड़ला भवन में गिरफ्तार किये गये और गिरफ्तार करके उन्हें चुपके से पूना के पास आगा खाँ महल में नजरबन्द के रूप में पहुँचा दिया गया। महात्मा गांधी जी के साथ काँगरेस कार्य समिति के सभी मेम्बरों को भी कैद करके अहमद नगर के किले में पहुँचाया गया और नजरबन्द किया गया।

देश के नेताओं की इस गिरफ़्तारी से देश के कोने-कोने में बड़ी नाराजगी फैली, और सरकार तथा जनता के बीच में एक लड़ाई छिड़ गई। जनता हर एक जगह दिल खोलकर लड़ी, और अधिकारियों ने जनता को दबाने में हर एक उपाय से काम लिया। यह लड़ाई दो तीन महीने तक चलती रही। इस लड़ाई में यद्यपि जनता का बहुत नुकसान हुआ, पर जनता बड़े धैर्य से हर एक नुकसान को सहा, और अपने साहस को बनाये रखा।

कांग्रेस पर दोषारोपण

जब आंदोलन शान्त हो गया, तब सरकार ने आंदोलन में भाग लेने वालों को दंड देना शुरू किया। बहुत से आदमी जो जेलों में बन्द थे, उनके मुकदमे हुए और उन्हें लम्बी लम्बी सजाएँ दी गईं। सामूहिक जुर्माने के

रूप में देश के गाँव-गाँव और नगर नगर में बड़े बड़े जुर्माने वसूल किये गये। इन्हीं दिनों सरकार की ओर से एक ऐसा काम किया गया, जिसका असर महात्मा गाँधी जी के चित्त पर सबसे अधिक पड़ा। सरकार ने एक रिपोर्ट प्रकाशित की, जिसमें उसने यह दिखाया, कि १९४२ की अगस्त महीने में देश में जो विद्रोह हुआ है, उसकी जिम्मेदारी कांग्रेस के नेताओं के ऊपर है। जब रिपोर्ट अखबारों में निकली, तब महात्मा गाँधी ने भी उस रिपोर्ट को पढ़ा। इसी रिपोर्ट को लेकर महात्मा गाँधी जी ने जेल से ही वायसराय को पत्र लिखा, और उन्होंने उन सारे दोषों का खंडन किया, जो सरकार की ओर से कांग्रेस पर लगाये गये थे। महात्मा गाँधी जी ने कई पत्र वायसराय को भेजे और वायसराय ने भी महात्मा गाँधी के सभी पत्रों का जवाब दिया।

दो प्रेमियों का विछोह

जिन दिनों महात्मा जी आगा खाँ महल में नजरबंद थे, उन्हीं दिनों उनके जीवन में दो सबसे बड़ी घटनाएँ घटीं, अर्थात् उनके दो साथियों का चिर वियोग हुआ। उनमें एक थे महादेव देसाई, और दूसरी महात्मा गाँधी जी की धर्मपत्नी स्वयं कस्तूरी बा थीं। महादेव देसाई की मृत्यु कस्तूर बा के पहले हुई, और कस्तूर बा की मृत्यु उन दिनों के कुछ ही पहले हुई जब महात्मा गाँधी जी को नजरबंदी

की हालत से रिहा किया जाने वाला था। उन दिनों चिर-प्रेमियों के चिर-वियोग का महात्मा गाँधी के चित्त पर अधिक प्रभाव पड़ा। महादेव देसाई की मृत्यु पर तो महात्मा जी के आँखों से आँसू निकल आये थे। महात्मा गाँधी ने आगा खाँ महल में स्वयं अपने हाथों से महादेव देसाई का दाह संस्कार किया था, और उनकी समाधि बनवाई थी। महात्मा गाँधी जब तक आगा खाँ महल में रहे, बराबर महादेव देसाई की समाधि पर जाते रहे और अपने हाथों से उस पर फूल चढ़ाते रहे।

तीन सप्ताह का उपवास

जनता और सरकार की लड़ाई बन्द हो चुकी थी। सरकार जनता को दबाने के लिए हर एक तरह के उपाय काम में ला रही थी। साथ ही विदेशों में इस बात का प्रचार भी हो रहा था कि अगस्त की बगावत की जिम्मेदारी काँगरेस के नेताओं के ऊपर है। महात्मा गाँधी जी ने वाइसराय को पत्र लिखा। लेकिन जब कोई फल न निकला तो महात्मा गाँधी जी ने तीन सप्ताह का उपवास किया। महात्मा गाँधी जी के उपवास से देश विदेश में चारों ओर हलचल मच गई। महात्मा जी ज्यों-ज्यों कमजोर होने लगे, त्यों-त्यों लोग अधिक आशङ्कित होने लगे। गाँधी जी की चिरायु के लिये देश के कोने कोने में यज्ञ और हवन किये गये। हिन्दू और मुसलमान दोनों ने ही मन्दिरों

और मस्जिदों में प्रार्थनाएँ की। साथ ही सारे देश ने एक स्वर से यह माँग की, कि गाँधी जी को रिहा कर दिया जाय। किन्तु कोई फल न हुआ। उन्हीं दिनों वाइसराय की कार्य-कारिणी में महात्मा गाँधी जी को छोड़ देने के लिए प्रस्ताव पेश हुआ किन्तु सदस्यों के मतभेद के कारण गिर गया। फल स्वरूप तीन मेम्बरों ने वाइसराय के कौंसिल से इस्तीफ़ा दे दिया।

दो वर्ष बाद रिहाई

महात्मा गाँधी जी का उपवास सकुशल हो गया था। यद्यपि उपवास के दिनों में कोई क्षण ऐसा भी आगया था, जब लोग महात्मा जी के जीवन से अधिक निराश हो चुके थे। कहा जाता है कि एक ऐसा भी क्षण आ गया था जब महात्मा जी की नाड़ी छूट गई थी। महात्मा जी उपवास की कठिन परीक्षा को पार तो कर गये, किन्तु उनका स्वास्थ्य अधिक खराब हो गया, और वे बहुत कमजोर हो गये। लोगों को डर होने लगा, कि अगर गाँधी जी को छोड़ नहीं दिया जाता तो हो सकता है, कि सरकार को कोई खतरा उठाना पड़े। स्वयं सरकार का ध्यान भी इस ओर आकर्षित हुआ। उन्हीं दिनों गाँधी जी की जीवन-संगिनी कस्तूर बा का देहान्त हो गया। अब सरकार को भी कुछ दयादारी सूझी और उसने १९४४ ई० की ७ वीं मई को बिना किसी शर्त के महात्मा गाँधी जी को

रिहा कर दिया। जेल से निकलते ही गाँधी जी जिन्ना से मिले, पर अटूट प्रयत्न के बाद भी हिन्दू मुसलमानों की एकता का रास्ता न निकल सका।

कस्तूरबा ट्रस्ट

गाँधी जी बम्बई से पुनः सेवाग्राम लौट आये और शान्ति पूर्वक जीवन व्यतीत करने लगे। उन्हीं दिनों देश के कुछ नेताओं की ओर से कस्तुरबा स्मारक कायम करने के लिये आन्दोलन चलाया गया। देश के नगर-नगर में आन्दोलन चला और एक करोड़ रुपया एकत्र किया गया तथा कस्तूरबा स्मारक के लिये एक ट्रस्ट की योजना की गई।

महात्मा गाँधी पहले इस आन्दोलन से अलग रहे। लेकिन जब ट्रस्ट बन गया तब लोगों ने गाँधी जी से प्रार्थना की कि वे ट्रस्ट के सभापति बन जायँ! गाँधी जी ने लोगों की बात स्वीकार कर ली। और अब तक वही कस्तूरबा ट्रस्ट के सभापति थे।

शिमला कानफरेंस

इन दिनों संसार में युद्ध की परिस्थिति बदल गई थी जर्मनी हार चुका था और अँग्रेज जीत चुके थे। अतः वाइसराय लार्ड वेवल ने हिन्दुस्तान में जनता और सरकार के बीच के मनमुटाव को दूर करने के लिये एक प्रयत्न किया। उनके उस प्रयत्न में यह बात भी शामिल थी कि लीग और कांग्रेस के समझाने के लिये किसी तरह

कोई रास्ता निकल आये। इसी विचार को लेकर लार्ड वेवेल विलायत गये, और वहाँ उन्होंने अधिकारियों से सलाह मशविरा किया। सलाह मशविरा करने के बाद लार्ड वेवेल एक प्रस्ताव लेकर हिन्दुस्तान में आये, और उन्होंने उस प्रस्ताव को हिन्दुस्तान के बड़े-बड़े नेताओं के सामने रक्खा।

लार्ड वेवेल ने हिन्दुस्तान के बड़े-बड़े नेताओं को शिमला में बुलाकर कानफरेन्स की। गाँधी जी और मि० जिन्ना भी इस कानफरेन्स में शामिल हुये। लोगों को बहुत कुछ आशा होने लगी थी कि यह कानफरेन्स सफल हो जायगी और काँग्रेस और लीग के समझौते के लिये कोई रास्ता निकल आयेगा। किन्तु कुछ फल न निकला और कानफरेन्स कई दिनों तक चलने के बाद भंग हो गई।

नेताओं की रिहाई

फिर निराशा छा गई और महात्मा गाँधी अपने रचनात्मक कार्य में लग गये। इन्हीं दिनों जापान भी लड़ाई में हार गया, लन्दन में पार्ल्यामेन्ट का चुनाव हुआ। इस चुनाव में चर्चिल हार गये। उनके स्थान पर मजदूर सरकार संगठित हुई। फलस्वरूप देश के सभी बड़े बड़े नेता जेल से छोड़ दिये गये और देश में फिर एक अपूर्व जोश की लहर दौड़ गई।

नेताओं के छूटने पर सरकार ने केन्द्रीय एसेम्बली और प्रान्तीय एसेम्बलियों के चुनाव की घोषणा की। काँग्रेस

ने भी इस चुनाव में भाग लेने के लिये निश्चय किया। इसी बात पर विस्तृत रूप से विचार करने के लिए बम्बई में भारतीय कॉंग्रेस कमेटी की बैठक हुई। गाँधी जी भी इस बैठक में सम्मिलित हुये थे।

बङ्गाल का दौरा

केन्द्रिय एसेम्बली का चुनाव चल रहा था, किसी-किसी प्रान्त में चुनाव समाप्त भी हो गया था, और कॉंगरेस को शत-प्रतिशत सफलता प्राप्त हुई थी। उन्हीं दिनों दिसम्बर के महीने में महात्मा गाँधी ने बङ्गाल का दौरा किया। उस दौरे का उद्देश्य यह बताया जाता है, कि महात्मा जी अकाल से पीड़ित बङ्गाल को देखना चाहते थे। महात्मा जी कलकत्ते में सोदपुर आश्रम में ठहरे। महात्मा जी के जाने से सारे कलकत्ते में उत्साह की एक लहर सी दौड़ पड़ी थी।

सन् ४६ मार्च के अन्तिम सप्ताह में बृटिश सरकार ने भारत मंत्री तथा बृटिश मंत्रिमंडल के दो अन्य सदस्यों को भारत इस इरादे से भेजा कि भारत के विभिन्न राजनीतिक दलों में समझौता कराकर केन्द्र में अस्थायी राष्ट्रीय सरकार की स्थापना करें तथा भारत का नया विधान बनाने के लिये विधान निर्मातृ परिषद की स्थापना करें। वह मंत्रिमंडल भारत में लगभग तीन महीने रहा। गाँधी जी ने कॉंग्रेस, लीग तथा बृटिश सरकार में समझौता

कराकर राष्ट्रीय सरकार स्थापित कराने के लिए बड़ा प्रयत्न किया। बृटिश मंत्रिमंडल के मंत्रियों से कई दिनों तक मिलते रहे। उनके प्रयत्नों से बहुत कुछ सफलता भी मिली। दोनों दलों ने राष्ट्रीय सरकार और विधान बनाने वाली परिषद् में भाग लेने के लिये अपनी स्वीकृति दी। पर जब राष्ट्रीय सरकार बनने लगी तो जिन्ना साहब के हठ और दुराग्रह के कारण सरकार न बन सकी। मंत्रिमंडल वापस चला गया।

जिन्ना साहब ने वायसराय को सूचित किया कि लीग अस्थायी सरकार में शामिल होगी, पर वायसराय ने ऐसा करना स्वीकार न किया, इससे मुस्लिम लीग आपे से बाहर हो गई। उसने १६ अगस्त को देश भरके मुसलमानों से 'डाइरेक्ट एक्शन डे' मनाने को कहा। इसके फल स्वरूप हिन्दुस्तान के कई शहरों में खास कर कलकत्ते में भयंकर मारकाट हुई। कलकत्ते में ५-६ दिन ऐसा जान पड़ता था कि वहाँ पर कोई सरकार ही नहीं है। इन खबरों को सुनकर गाँधीजी को अत्यन्त कष्ट हुआ। इधर वायसराय ने देश में अशान्ति बढ़ते देख कर काँग्रेस के सभापति पं० जवाहर लाल नेहरू को अस्थायी सरकार का निर्माण करने के लिए पुनः आमंत्रित किया। वायसराय और पं० जी की बातचीत हुई। जब वायसराय ने काँग्रेस के सन्देह को दूर कर दिया और उसकी कुछ बातें मानली तो पंडित जी ने अस्थायी सरकार

में शामिल होना स्वीकार किया। गाँधी जी को पंडित जी ने परामर्श देने के लिए आमंत्रित किया। तदनुसार गाँधी जी २७ अगस्त को दिल्ली पहुँच गये। २ सितम्बर को पंडित जी की आधीनता में अस्थाई सरकार का निर्माण हो गया। गाँधी जी सेवाग्राम लौट जाना चाहते थे, पर नई सरकार के सामने जो समस्यायें आने लगीं, उससे उनके लिये दिल्ली छोड़ वहाँ जाना संभव न हो सका। २३ सितम्बर को दिल्ली में अखिल भारतीय काँग्रेस कमेटी की बैठक हुई। उसमें भी गाँधी जी शरीक हुये। गाँधी जी हरिजन कालोनी के पास भंगियों की बस्ती में ठहरे हुये थे। वहाँ मन्त्रियों को सलाह देने के साथ ही चर्खा का क्लास भी खोल दिया जो ग्यारह दिन तक चला, जिसमें कुल १५९ व्यक्ति शामिल हुये।

गाँधी जी सेवाग्राम लौट जाना चाहते थे, पर अस्थायी सरकार के सम्मुख नित नई समस्यायें आती जाती थीं। अतः उनका जाना स्थगित हो जाता था। इतने में पूर्वी बंगाल के नोआखाली जिले में, जहाँ पर हिन्दू मुसलमानों के मुकाबिले में थोड़ी तादाद में हैं, दंगा हो गया। मुसलमानों ने हिन्दुओं को लूटा, उनकी स्त्रियों, लड़कियों को अपने अधिकार में करके उनके साथ शादी की, कई हिन्दुओं को जबर्दस्ती मुसलमान बना डाला। मुसलमान न बनने पर उन्हें जान से मार डाला। इन खबरों को सुनकर गाँधी जी

अधीर हो उठे। बहुत से लोग पूर्वी बंगाल से व कलकत्ते से गाँधी जी के पास पहुँचे और उनको पूर्वी बंगाल के हिंदुओं की दुख दर्द की कहानी सुनाई। अब गाँधी जी अपने को रोक न सके और उन्होंने पूर्वी बंगाल जाकर वहाँ भयत्रस्त हिन्दुओं को साहस और धैर्य दिलाने और जहाँ तक हो सके उनके कष्टों को दूर कराने का इरादा किया। तदनुसार २६ अक्टूबर को वह कलकत्ते के लिये चल पड़े। वहाँ पर ३-४ दिन तक बंगाल के गवनर और वहाँ के प्रधान मंत्री व अन्य मंत्रियों से मिलकर पूर्वी बंगाल के हिन्दुओं के दुख दूर करने के सम्बन्ध में बात चीत करते रहे। वहाँ से स्पेशल ट्रेन द्वारा पूर्वी बंगाल के लिये रवाना हुये। गाँधीजी उन जगहों को गये जहाँ २ पर हिन्दुओं को ज्यादा नुकसान पहुँचाया गया था। फिर उन्होंने अपने साथियों को अलग अलग कर काम करने के लिये नियुक्त कर दिया। खुद भी इस वृद्धावस्था में नोआखाली के उबड़ खाबड़ और छोटे २ नालों से भरे खेतों से होकर एक गाँव से दूसरे गाँव जाने के लिये केवल दो साथियों के साथ चल पड़े। यहाँ तक कि अपने प्राइवेट सेक्रेटरी प्यारेलाल जी तक को अपने साथ नहीं लिया। कुछ दिन तक दोनों आदमियों के साथ जहाँ तहाँ गावों में घूमत रहे। पर १ जनवरी ४७ से एक प्रोग्राम बना लिया जिसके अनुसार प्रति गाँव में किसी भी हिन्दू या मुसलमान के घर ठहर जाते फिर दूसरे दिन सबेरे

दूसरे गाँव को, जो वहाँ से २, ३ मील के फासले होते, पर जाते। दूसरे गाँव में जाकर वह वहाँ की पूरी जानकारी प्राप्त करते। वहाँ के हिन्दुओं को साहस दिलाते तथा मुसलमानों को समझाते कि उनका धर्म है कि हिन्दुओं को, जो वहाँ की अल्प-संख्यक जाति हैं, उनकी रक्षा करें। साथ ही वह बंगाल सरकार पर भी जोर डालते कि जिन हिन्दुओं के घर जला डाले गये हैं, तोड़ फोड़ दिये गये हैं, उन्हें बनवा दिया जाय तथा जो हिन्दू औरतें भगाई गईं तथा मुसलमान बना डाली गई हैं उन्हें पुनः उनके अभिभावकों को दे दिया जाय। साथ ही जो मर्द बच्चे मुसलमान बना डाले गये है, तथा हिन्दुओं के धनजन की जो क्षति हुई है, उसकी भी पूर्ति की जाय।

स्वराज्य की स्थापना

यद्यपि गाँधी जी नोआखाली इस इरादे से आये थे कि नोआखाली में पूर्ण शान्ति कायम करके जायँगे और हिन्दू मुसलमानों में भाई-चारे का सम्बन्ध स्थापित कर देंगे, पर बिहार के मुसलमान चाहते थे कि गाँधी जी बिहार आकर वहाँ का वातावरण ऐसा बना देवें कि वह लोग पहले की तरह शान्तिपूर्वक रह सकें। इस बात के लिये डा० सैयद महमूद ने गाँधी जी को बार २ लिखा, तब गाँधी जी नोआखाली का कार्य अपने कुछ चुने हुये साथियों को सौंप कर मार्च के प्रारंभ में बिहार पहुँचे। पटने पहुँचकर बिहार

मंत्रिमन्डल से मिलकर विहार के मुसलमान शरणार्थियों को पुनः उनके गावों में बसाने तथा गावों में भयत्रस्त मुसलमानों के डर को दूर करने की समस्या पर बातें की। पटने में ८-१० दिन रहकर नोआखाली की तरह विहार के गावों में घूम २ कर हिन्दू मुसलमानों को अपना बैर भाव भुलाकर शान्तिपूर्वक रहने का उपदेश देने लगे। जहाँ कहीं वह जाते, असंख्य लोग उनके उपदेश सुनने के लिये इकट्ठे हो जाते।

इस बीच में देश में बढ़ते हुये असन्तोष को देखकर बृटिश मंत्रिमंडल ने घोषणा की कि जून १९४८ तक अँगरेज भारत से वहाँ का शासन वहाँ के लोगों को सौंप कर हट जायँगे। इसमें देश भर में एक नई चेतना, एक नया उत्साह फैल गया।

इस घोषणा के साथ भारत के वायसराय लार्ड वेवेल वापस बुला लिये गये और उनकी जगह पर माउंट वेटन वायसराय नियुक्त हुये। नये वायसराय ने भारत पहुँचकर यह घोषणा की कि वह देश में बढ़ते हुये असन्तोष और साम्प्रदायिक कलह को अन्त करने के लिये प्रत्येक उचित उपाय करेंगे। उन्होंने काँग्रेस व मुसलिम लीग के नेताओं को परामर्श करने के लिये बुलाया। तदनुसार मि० जिन्ना व जवाहरलाल नेहरू वायसराय से मिले। वायसराय ने गाँधी जी से भी आग्रह किया कि यथाशीघ्र दिल्ली आकर

उनसे मिलें। उसी समय दिल्ली में एशियाई कॉंफ्रेंस हो रही थी जिसमें सम्मिलित होने के लिये उनसे लोगों ने प्रार्थना की थी, पर बिहार में व्यस्त रहने के कारण उन्होंने आने से असमर्थता प्रकट की थी, पर जब वायसराय ने बुलाया तो उनको आना ही पड़ा। गाँधी जी ३१ मार्च को दिल्ली पहुंचे। एशियाई कॉंफरेन्स में शामिल हुये और भाषण भी दिया। उनको देखने और भाषण सुनने के लिये एशिया के भिन्न २ राष्ट्रों के प्रतिनिधि अधीर थे। उन्होंने गाँधी जी के दर्शन करके और भाषण सुनकर अपने को धन्य माना।

दिल्ली में यद्यपि गाँधीजी केवल ६-७ दिनों के लिये आये थे पर वहाँ पर जो महत्वपूर्ण राजनीतिक वार्तायें चल रही थीं उसमें उनका भाग लेना आवश्यक था। अतः गाँधी जी को अपनी इच्छा के विरुद्ध भी दिल्ली में लगभग डेढ़ महीने रह जाना पड़ा।

अब यह स्पष्ट होने लगा कि देश पाकिस्तान और शेष हिन्दुस्तान दो भागों में बँट जायगा। पर गाँधी जी चाहते थे कि ऐसा न हो। इस विषय को लेकर गाँधी जी और जिन्ना में दिल्ली में बातचीत भी हुई पर बातचीत का कोई परिणाम न निकला। गाँधी जी ने यह भी कहा कि चाहे भारत में अशांति ही क्यों न हो पर अँग्रेजों को जल्द से जल्द इसे छोड़ देना चाहिये। १६ मई को ब्रिटिश

मंत्रिमंडल के बुलाने पर लार्ड माउंट बैटेन इग्लैंड गये और नयी योजना लेकर भारत लौटे। दिल्ली में उन्होंने गाँधी जी तथा दूसरे नेताओं को बुला कर उनके समक्ष बृटिश मंत्रिमंडल की योजना को रखा जिसके अनुसार १५ अगस्त तक अंग्रजी सत्ता के समाप्त होने तथा भारत को दो भागों में बाँटा जाना था। दोनों जातियों के नेताओं को उस योजना को स्वीकार करना पड़ा। गाँधी जी को यह योजना स्वीकार न थी, पर फिर भी उन्होंने दूसरा कोई चारा न देख देश को सलाह दिया कि इस योजना को मान लेवे। बृटिश पार्लीयामेंट में एक बिल पेश हुआ जिसके अनुसार पाकिस्तान और हिन्दुस्तान दो स्वतंत्र राज्य स्वीकार किये गये।

जैसा कि पहले घोषित हो चुका था कि १५ अगस्त को बृटिशसत्ता समाप्त हो जायगी और भारत स्वतन्त्र हो जायगा, उसके अनुसार देश में इस दिवस को बड़े धूम-धाम से मनाने को कहा गया। अतः बड़े जोर से तैयारी होने लगी। पर गाँधी जी किसी प्रकार के धूमधाम के प्रदर्शन के विरुद्ध थे। वह चाहते थे कि मैं नोआखाली १५ अगस्त के पहले पहुँचूं।

फिर गाँधी जी पटना होते हुए कलकत्ता पहुँचे और सोदपुर के आश्रम में ठहरे। उस समय कलकत्ते में राज मार काट चल रही थी। अतः सुहरावर्दी तथा दूसरे

लोगों ने गाँधी जी पर जोर डाला कि आप, जब तक कल-कत्ते में शान्ति स्थापित न हो जाय तब तक नोआखाली न जाँय। अतः उनकी बात मानकर गाँधी जी कलकत्ते में शान्ति पूर्ण वातावरण उत्पन्न करने की चेष्टा करने लगे गाँधी जी व सुहरावर्दी साहब ऐसे स्थान में रहने लगे जहाँ पर ज्यादातर मारकाट चल रही थी। इस पर वहाँ के लोगों ने वहाँ उग्र प्रदर्शन किया। गाँधी जी पर ढेले, ईंट फेंके गये, पर गांधी जी इससे विचलित न हुये। उन्होंने अपना शान्ति मिशन जारी रखा। इसका परिणाम हुआ कि हिन्दू मुसलमान अपना पूर्व का वैर भुलाकर एक दूसरे से गले लगाने लगे। १५ अगस्त को जब कि सारे भारत में स्वाधीनता दिवस मनाया गया, तो कलकत्ते में भी बड़े समारोह के साथ वह उत्सव मनाया गया। हिन्दू और मुसलमान दोनों ने बड़े उत्साह से भाग लिया मुसल-मानों ने भी राष्ट्रीय झंडे को अपने अपने घरों पर फहराया हिन्दू मसजिदों में गये और मुसलमान मन्दिरों में। गाँधीजी प्रतिदिन संध्या समय कलकत्ते के भिन्न भिन्न मंडलों तथा पास की बस्तियों में जाकर प्रार्थना करते और लोगों को उपदेश करने लगे। इसका बड़ा अच्छा प्रभाव पड़ता। लाखों स्त्री पुरुष हिन्दू मुसलमान उन उपदेशों को सुनते। ऐसा जान पड़ने लगा कि अब कलकत्ते में स्थायी शान्ति स्थापित हो जायगी जो समूचे भारत के लिये एक उदाहरण बन जायगा। पर यकायक, १८ दिन की शान्ति के बाद

पुनः आग १ सितम्बर को भड़क उठी। यह देखकर गाँधीजी को अत्यन्त मानसिक कष्ट हुआ और उन्होंने उसी दिन से उपवास करना शुरू कर दिया। उनका कहना था कि जब कि कलकत्ते ही में नाकामयाब हुआ तो कौन मुँह लेकर पंजाब जाऊँगा। मैं उपवास तभी समाप्त करूँगा जबकि यहाँ शान्ति स्थापित हो जायगी। लेकिन शीघ्र ही वहाँ शान्ति स्थापित हो गई तथा वहाँ के प्रधान मन्त्री से तथा कलकत्ते के प्रमुख हिन्दू मुसलमानों से शान्ति बनाये रखने का आश्वासन लेकर आप दिल्ली आगये।

उस समय दिल्ली में हिन्दू मुसलिम दंगा बड़े जोरों पर था। निरपराध लोगों की नृशंस हत्या की जा रही थी। पुलिस और फौज भी दंगे पर काबू पाने पर सफल नहीं हो रही थी। पर महात्मा जी के दिल्ली में आते ही परिस्थिति सुधारने लगी। महात्मा जी बिरला भवन में ठहरे थे। रोज शाम को प्रार्थना सभा में लोगों को शान्त रहने का उपदेश देने लगे। वह उन स्थानों में भी, जहाँ शरणार्थी रहते थे, जाया करते और उनकी तकलीफों को सुनकर उसे दूर करने का उपाय करते। लगभग दो तीन महिने तक उनके उद्योग का अच्छा फल दिखलाई पड़ा, फिर भी गाँधीजी जैसा चाहते थे, वैसा परिणाम न निकला। वह चाहते थे कि जिन मसजिदों या मुसलमानों के घरों पर शरणार्थियों ने कब्जा कर रखा है, उन्हें छोड़ देवें। पर शरणार्थी उनकी बात नहीं सुनते थे। इससे दुखी होकर गत १३ जनवरी से उपवास

आरम्भ हुआ। इससे दिल्ली ही में नहीं, भारत भर में चिन्ता और बेचैनी फैल गई। ५ दिन उपवास के बाद १८ ता० का नेताओं और जनता के आश्वासन देने पर गाँधी जी ने उपवास तोड़ा। पर देश में कुछ ऐसे लोग भी थे, जिनको गाँधी जी की कार्यप्रणाली अच्छी नहीं लगती थी। ऐसे ही लोगों में से एक ने २० जनवरी को प्रार्थना सभा के समय पर गाँधी जी को लक्ष्य करके एक बम फेंका, पर वह उन्हें न लगा। वह आदमी तुरन्त पकड़ लिया गया, पर उसके दूसरे साथी भाग निकले। उन्हीं में से एक ने, ३० जनवरी को, जब कि गाँधी जी प्रार्थना के लिए सभा में जा रहे थे लोगों की भीड़ में से आगे बढ़ कर उनपर रिवालवर से ३-४ गोली चलाई। गाँधी जी राम २ करते हुए वहीं गिर पड़े और कुछ ही देर के बाद ५ बजकर ४० मिनट पर उनकी आत्मा करोड़ों देश वासियों को रोते कलपते छोड़कर अनन्त में मिल गई। ३१ जनवरी को उनका शव लाखों लोगों की भीड़ से होता हुआ जमुना तट पर पहुँचा जहाँ पर चन्दन की चिता पर वह जलकर भस्म होगया। उनकी अस्थि १३ वें दिन १२ फरवरी को प्रयाग, काशी आदि भारत के सैकड़ों स्थानों पर गङ्गा, यमुना आदि नदियों में प्रवाहित की गई। महात्मा जी की मृत्यु से न केवल भारत ही का बल्कि संसार की अपार हानि हुई, जिसकी सैकड़ों वर्षों में भी पूर्ति नहीं हो सकती।